SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुगंधा

45 वाँ अंक
अप्रैल, 2025 से सितम्बर, 2025

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पंजाब, चण्डीगढ़ - 160017

कुर्सियों पर बाएं सेः

श्री पुष्पेन्द्र गहलोत (उप महालेखाकार, प्रशासन), श्री कुमार अभय (महालेखाकार),
श्री सुनील कुमार (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, राजभाषा अनुभाग)

खड़े हुए बाएं सेः

श्री आशीष कुमार जाँगीड़ (कनिष्ठ अनुवादक), सुश्री प्रियंका (कनिष्ठ अनुवादक)
श्री गुरदीप कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), श्री महेन्द्र सिंह (वरिष्ठ अनुवादक)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

सुगंधा

45 वाँ अंक

अप्रैल, 2025 से सितम्बर, 2025

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

पंजाब, चण्डीगढ़ - 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	**श्री कुमार अभय** महालेखाकार
संरक्षक	:	**श्री पुष्पेन्द्र गहलोत** उप महालेखाकार (प्रशासन)
संपादक	:	**श्री सुनील कुमार** वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)
संपादन सहयोग	:	**श्री महेंद्र सिंह** वरिष्ठ अनुवादक **श्री गुरदीप कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **श्री आशीष कुमार जाँगीड़** कनिष्ठ अनुवादक **सुश्री प्रियंका** कनिष्ठ अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	**पंजाबी सांस्कृतिक परिदृशय** **परिकल्पना और डिज़ाइन: दीपक सिवाच**
अंतिम पृष्ठ	:	**पंजाबी लोक नृत्य परिदृशय (स्रोत-इंटरनेट)**
अंक	:	**45 वाँ अंक**
प्रकाशक	:	**राजभाषा कार्यान्वयन समिति,** **कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)** **पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017**
मूल्य	:	**राजभाषा के प्रति निष्ठा।**
मुद्रक	:	**कैपिटल ग्राफिक्स एस.सी.ओ. 133-135, सैक्टर 17-सी, चण्डीगढ़।**

नोट : रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

प्रकाशन विवरण	2
अनुक्रमणिका	3
गृह एवं सहकारिता मंत्री का संदेश	4–5
संदेश	6–8
मुख्य संरक्षक का संदेश	9
संरक्षक का संदेश	10
संपादकीय	11
पाठकों के पत्र	12

आलेख

अच्छे कर्म करने से न केवल वर्तमान में सुख मिलता है, बल्कि भविष्य में भी अच्छे फल मिलते हैं ।	विशेष बिस्वाल	14–19
भगवान श्रीकृष्ण का धृतराष्ट्र को उपदेश	सिकन्दर कुमार	20–22
भरोसा	तुषार कान्ति सिन्हा	23
झूठ	तुषार कान्ति सिन्हा	24
कठिन राह की सीखः अनुशासन की ताकत	आयुष अरोड़ा	25–28
प्रसन्नता कोई गंतव्य नहीं बल्कि मार्ग है	शिव कुमार	29–33
ए.आई. का भावनात्मक जुड़ाव	सुदेश कुमार	34

कविता

राजभाषा हिंदीः कर्तव्य और संकल्प	सुनील कुमार	41
धरती के रखवाले	मलखान सिंह आज़ाद	42
एक दिन सब बदल जाएगा	धर्म सिंह मीना	43
मोबाईल का असर और हमारा हश्र	राजीव सूद	44
गर्भस्थ कन्या, लड़की एक अनजानी सी	तुषार कान्ति सिन्हा	45
माँ से बात	दिनेश	46
हाँ मैं अब कुछ बदल सा गया हूँ	गुरदीप कुमार	47
मरघट	महेंद्र पाल माही	48
खुद को भूला बैठा	महेंद्र पाल माही	49
प्रगति	महेंद्र सिंह	50
बदलाव	सुश्री मानसी दुबे	51

कार्यालयीन समाचार

सेवानिवृत्ति और श्रद्धांजलि	52

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

संदेश

नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
हरियाणा, चंडीगढ़

यह प्रसन्नता का विषय है कि आपके कार्यालय के द्वारा राजभाषा हिंदी के संवर्धन हेतु गृह-पत्रिका 'सुगंधा' के 45वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रकाशन राजभाषा के प्रचार प्रसार में अपना अमूल्य योगदान निरंतर प्रदान करता रहेगा।

राजभाषा हिंदी के उन्नयन, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार के संकल्प में विभागीय पत्रिकाएं एक सशक्त स्तंभके रूप में कार्य करती हैं। किसी भी संगठन की प्रगति केवल उसके आंकड़ों से नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक चेतना और भाषाई समृद्धि से भी मापी जाती है। कार्यस्थल की व्यस्तताओं के बीच, कार्मिकों के भीतर छिपी साहित्य साधना और सृजनशीलता को यह पत्रिका एक सुलभ मंच प्रदान करती है। यह राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति झिझक को दूर कर, उसे दैनिक कार्य-व्यवहार और रचनात्मक अभिव्यक्ति का सहज माध्यम बनाने में सहायक सिद्ध हो रही है। इस दिशा में, पत्रिका 'सुगंधा' न केवल एक प्रकाशन है, बल्कि कार्यालय के कार्मिकों के सामूहिक प्रयासों और वैचारिक प्रतिबद्धता का जीवंत दस्तावेज़ भी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी वैचारिक विविधता और भाषाई सौंदर्य का अनूठा संगम होगा। यह न केवल सूचनाओं का आदान-प्रदान करेगा, बल्कि हमारे कार्मिकों की साहित्यिक अभिरुचि को एक नवीन क्षितिज प्रदान करेगा।

पत्रिका 'सुगंधा' के सफल प्रकाशन हेतु मैं संपादक मंडल एवं पत्रिका परिवार के समस्त कर्मठ सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ। पत्रिका के निरंतर प्रगतिशील एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मैं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

नवनीत
नवनीत गुप्ता

सत्यमेव जयते

संदेश

तृप्ति गुप्ता
महालेखाकार,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू. टी. चण्डीगढ़

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 45 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े हुए सभी रचनाकारों, पाठकों और सह संपादक मण्डल को बधाई देती हूँ।

विभागीय पत्रिकाओं ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक नया मार्ग प्रशस्त किया है। हिंदी पत्रिकाएं विभाग से जुड़े लोगों को अपने विचार प्रकट करने और हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए अवसर प्रदान करती हैं। ये पत्रिकाएं विभिन्न कार्यालयों के मध्य एक सेतु का कार्य करती हैं, जिससे कार्यालयों में होने वाली गतिविधियों की समय-समय पर जानकारी मिलती रहती है। हिंदी न केवल सरकारी काम-काज की भाषा है बल्कि पूरे देश में विचार प्रस्तुत करने का सबसे सशक्त माध्यम भी है।

"सुगंधा" पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पुनः शुभकामनाएं देती हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

तृप्ति गुप्ता

सत्यमेव जयते

संदेश

समीर मेहता
प्रधान निदेशक
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय), चण्डीगढ़

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सुगंधा" के 45 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन न केवल राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है बल्कि यह कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करने का भी सराहनीय प्रयास है। ऐसे प्रकाशन विभागीय गतिविधियों को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ हिंदी के प्रति जागरूकता एवं प्रतिबद्धता को भी सुदृढ़ करते हैं।

मुझे विश्वास है कि आपकी यह पत्रिका हिंदी भाषा के संवर्धन एवं प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देगी तथा अन्य कार्यालयों के लिए भी प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी।

आपको एवं आपकी संपूर्ण टीम को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

समीर

समीर मेहता

सत्यमेव जयते

मुख्य संरक्षक का संदेश

कुमार अभय
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पंजाब, चण्डीगढ़

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की गृह-पत्रिका 'सुगंधा' अपने 45वें अंक के पड़ाव पर पहुँच चुकी है । राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार की दिशा में इस पत्रिका का नियमित प्रकाशन एक सराहनीय और सकारात्मक प्रयास है ।

इस अंक हेतु अपनी उत्कृष्ट रचनाएँ साझा करने वाले सभी रचनाकार विशेष प्रशंसा के पात्र हैं । उनकी लेखनी में न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति झलकती है, बल्कि हमारी संस्कृति, गौरवशाली परंपरा और मानवीय मूल्यों का भी सुंदर समन्वय दि खाई देता है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये रचनाएँ कार्यालय के समस्त कार्मिकों के लिए प्रेरणा का अटूट स्रोत बनेंगी ।

पत्रिका का सफल संपादन राजभाषा के प्रति हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अटूट निष्ठा और समर्पण का प्रतीक है । मुझे विश्वास है कि 'सुगंधा' इसी प्रकार कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने हेतु निरंतर प्रोत्साहित और ऊर्जस्वित करती रहेगी ।

मैं इस सफल प्रकाशन हेतु समस्त रचनाकारों और कुशल संपादन मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ ।

कुमार अभय

सत्यमेव जयते

संरक्षक का संदेश

पुष्पेन्द्र गहलोत
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पंजाब, चण्डीगढ़

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'सुगंधा' का 45वां अंक पाठकों के समक्ष है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर मैं संपूर्ण पत्रिका परिवार को अपनी ओर से हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

विभागीय पत्रिकाएँ न केवल कार्यालय की विविध गतिविधियों का दर्पण होती हैं, बल्कि विभिन्न कार्यालयों के मध्य संवाद का एक सशक्त सेतु भी बनती हैं। हमारे कार्यालय के लेखक और कवि अपनी अद्भुत लेखनी के माध्यम से सूक्ष्म भावनाओं को जीवंत रूप प्रदान करते हैं। उनकी रचनाएँ मात्र मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि ये पाठकों को एक नई दिशा और सकारात्मक दृष्टिकोण भी प्रदान करती हैं।

सरल भाषा में होने के उपरांत भी ये रचनाएँ अत्यंत गहन और प्रभावशाली संदेश समेटे हुए हैं। इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं सभी रचनाकारों, संपादन मंडल तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी सहयोगियों की सराहना करता हूँ।

पत्रिका के उज्ज्वल और यशस्वी भविष्य हेतु मेरी अनंत मंगलकामनाएं।

पुष्पेन्द्र

पुष्पेंद्र गहलोत

सत्यमेव जयते

संपादकीय

आदरणीय पाठकवृंद,

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'सुगंधा' के 45वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए विशेष संतोष एवं गर्व का विषय है। यह अंक केवल एक औपचारिक प्रकाशन न होकर, राजभाषा हिंदी के संवर्धन तथा कार्यालयीन कार्य-संस्कृति में उसके सुदृढ़ एवं प्रभावी क्रियान्वयन के प्रति हमारी संस्थागत प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुरूप हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। शासन एवं प्रशासन के विविध स्तरों पर हिंदी के प्रभावी प्रयोग से कार्यों में पारदर्शिता, सरलता एवं जनसुलभता सुनिश्चित होती है। राजभाषा अनुभाग का सतत प्रयास रहता है कि कार्यालयीन कार्य निर्धारित राजभाषा नीति, नियमों एवं वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप संपादित हों तथा हिंदी को व्यवहारिक एवं सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित किया जाए।

'सुगंधा' का यह अंक कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक, बौद्धिक एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों का समन्वित संकलन है। यह पत्रिका प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने के साथ-साथ राजभाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, सहभागिता एवं सृजनशील वातावरण को भी प्रोत्साहित करती है।

इस अंक के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी रचनाकारों, संपादकीय मंडल के सदस्यों एवं सहयोगियों के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आशा है कि भविष्य में भी आप सभी का सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहेगा, जिससे 'सुगंधा' निरंतर प्रगतिशील एवं प्रेरणादायी प्रकाशन के रूप में विकसित होती रहे।

सादर,

सुनील कुमार
व.ले.प.अधिकारी, राजभाषा अनुभाग

पाठकों के पत्र

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2025-26/ 363 **दिनांक : 10.11.2025**

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़- 160017

विषयः- हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 44वें अंक की पावती।

संदर्भः- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 16.10.2025

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 44वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका की विषय वस्तु अच्छी है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय एवं रोचक हैं। विशेषतः **'हिंदी के प्रयोग में ए.आई. और मशीन अनुवाद की भूमिका', 'भगवान और इन्सान के बीच दीवार', 'हिंदी : हमारी पहचान', 'आजादी की पुकार', 'प्रशासन', 'अन्तर्मन'** एवं **'खुद पर राही भरोसा तो कर'** बोधगम्य एवं पठनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों की झलकियां मनमोहक एवं हस्त निर्मित चित्र सराहनीय हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

10.11.25

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

Phone:- 0532-2423485 Fax : 0532-2423485 E-mail- rtiallahabad@cag.gov.in

---

26/ I/1202668/2025

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०)
उत्तराखंड, ऑडिट भवन, कौलागढ,
देहरादून-248195

Office of the Accountant General (A&E)
Uttarakhand, Audit Bhavan, Kaulagarh,
Dehradun-248195

दूरभाष: 0135-2970866, **फैक्स:** 0135-2970859, https://cag.gov.in/ae/uttarakhand/en, E-mail: agaeuttarakhand@cag.gov.in

पत्र सं.26.रा.भा.अनु./विभागीय पत्रिकाएँ/2025-26I/1202668/2025 दिनांक17-11-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ-160017

विषय:- हिन्दी ई-पत्रिका "सुंगधा" के 44वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "सुंगधा" का 44वां अंक प्राप्त हुआ है। सहर्ष धन्यवाद।
पत्रिका में श्री तुषार कांत सिन्हा का लेख "खुशी", श्री महेन्द्र सिंह का लेख "पासवर्ड देवता" एवं सुश्री पवना देवी की कविता "अन्तर्मन" सहित सभी रचनाएँ सुंदर, सरल एवं भावप्रद हैं एवं सभी रचनाकारों के हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम का प्रतीक है।
पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया

Digitally signed by
Poonam Sharma
Date: 17-11-2025
16:38:04

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सं/हिंदीअनुभाग/वाह्यपत्रिकाओंपरप्रतिक्रिया//2022-23 I/1181341/2025

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur

सं.हि.अनु./म.ले.प.(ले.प.-II)/प्रतिक्रिया/20/2025-26/जा.क्र. दिनांक: 31/10/2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

विषय:- हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 44वें अंक की पावती के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 44वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री तुषार कांती सिन्हा का लेख 'खुशी', श्री सुदेश कुमार का लेख 'मधुर वाणी', सुश्री तमन्ना सहगल की कविता 'प्रशासन', श्री दीपक सिवाच की कविता 'खुद पर राही भरोसा तो कर', आदि रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन से जारी)

भवदीया ,

Digitally signed by
Priyanka B. Goswami
Date: 31-10-2025
15:09:40

सहायक निदेशक/राजभाषा

हिं.क/लेयह/प.पा./2024-25/ I/1205557/2025

महालेखाकार (ले व ह) ,केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम -695001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/ दिनांक 19-11-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब,

चण्डीगढ़ -160017

महोदय/महोदया,

विषय: हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका **'सुगंधा'** के 44वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

संदर्भः आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 16.10.2025

आपके कार्यालय की विभागीय हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका **'सुगंधा'** के 44वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री सिकंदर कुमार का लेख "भगवान और इन्सान के बीच दीवार", श्री सुदेश कुमार का लेख "मधुर वाणी", सुश्री अर्चिता की कविता "आज़ादी की पुकार", श्री मुकेश कुमार की कविता "छोटी-छोटी बातें", श्री रूपाश शर्मा की कविता "किस ओर जा रही है दुनिया" और श्रीमती एकता की कविता "विनाश लीला" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका **'सुगंधा'** की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया,

Digitally signed by
Rohini K R
Date: 19-11-2025
17:27:41

सहायक निदेशक (राजभाषा)

आलेख व कहानी

अच्छे कर्म करने से न केवल वर्तमान में सुख मिलता है, बल्कि भविष्य में भी अच्छे फल मिलते हैं।

विशेष बिस्वाल
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

अच्छे कर्मों का फल सदैव अच्छा होता है जबकि बुरे कर्म के कारण जातक को उसके नकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। व्यक्ति के कर्म ही उसके भाग्य का सृजन करते हैं। श्रीमद् भगवदगीता में कहा गया है कि कर्म करना आवश्यक है, लेकिन फल की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। हर कर्म का फल अवश्य मिलता है। अच्छे कर्म (पुण्य) और बुरे कर्म (पाप) दोनों का फल अलग-अलग होता है।

प्राचीन काल से ही इसका उपयोग कर्म और उसके फल के प्रकार को समझने के लिए उपयोग किया जा रहा है। ज्योतिष न केवल कर्मों की समझ प्रदान करता है, बल्कि आने वाले समय की दिशा को भी स्पष्ट करता है।ज्योतिष विज्ञान के द्वारा तीनों काल खण्डों (भूत, वर्तमान और भविष्य) के बारे में जाना जा सकता है । किसी जातक विशेष का फलादेश उसके कर्मों पर आधारित होता है। व्यक्ति के पिछले जन्म के कर्मों के आधार पर भविष्यफल तैयार होता है।

- ज्योतिष शास्त्र के ज़रिए जीवन में होने वाली घटनाओं का पता लगाया जाता है।
- ज्योतिष शास्त्र से व्यक्ति के स्वभाव और व्यवहार का पता चलता है।
- ज्योतिष शास्त्र से स्वास्थ्य, धन, विवाह, करियर जैसे विषयों में मार्गदर्शन मिलता है|

ज्योतिष व्यक्ति के जीवन को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । यह न केवल भविष्य की घटनाओं का अनुमान लगाने में मदद करता है, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन को संतुलित करने का प्रयास भी करता है ।

ज्योतिष में २७ नक्षत्रों और १२ राशियों का उपयोग किया जाता है। नक्षत्रों का महत्व अधिक होता है और इनका उपयोग अधिक सटीक भविष्यवाणी के लिए किया जाता है। ज्योतिष में कुंडली बनाने के लिए जन्म समय, स्थान और तिथि का उपयोग किया जाता है। इसमें सभी ग्रहों की स्थिति और दशाओं का महत्व होता है।

कुंडली में बारह राशियाँ केवल व्यक्ति के स्वभाव को नहीं दर्शातीं, बल्कि ये उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि करियर, परिवार, स्वास्थ्य और संबंधों पर भी गहरा प्रभाव डालती हैं। भावों की संख्या भी बारह होती है और प्रत्येक भाव जीवन के एक विशेष क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

ग्रहों की स्थिति के साथ-साथ उनके आपसी संबंध भी महत्वपूर्ण होते हैं। जब ग्रह एक-दूसरे के साथ संबंध बनाते हैं, तो वे एक-दूसरे की ऊर्जा को प्रभावित करते हैं । उदाहरण के लिए, शुक्र और चंद्रमा का संबंध प्रेम और भावनात्मक संतुलन का प्रतीक होता है। ऐसे संबंधों को समझकर यह निर्धारित कर सकते हैं कि किसी व्यक्ति के लिए कौन सा समय सबसे अनुकूल है और कौन सा समय चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

ज्योतिष में कुंडली बनाने के लिए जन्म लग्न निर्धारण हेतु स्थानीय समय मान ज्ञात होना जरुरी होता है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय दिवस है, एक दिवस में एक दिन और एक रात होते हैं । एक दिन रात में कुल ३० मुहूर्त होते हैं। एक दिन को तिथि कहा जाता है। दिन को चौबीस घंटों के साथ-साथ ८ पहर में भी बांटा गया है। एक

पहर करीब ३ घंटे का होता है। एक घंटे में लगभग दो घड़ी होती हैं, एक पल लगभग आधा मिनट के बराबर होता है । पहर के अनुसार चार पहर का एक दिन और चार पहर की एक रात होती है।

नक्षत्र: आकाश मंडल में स्थित ताराओं के समूह को नक्षत्र कहते हैं। ज्योतिष शास्त्रानुसार आकाश में २७ प्रमुख तारामंडल होते हैं । प्रत्येक नक्षत्र का अपना विशेष प्रभाव और गुण होते हैं, जो व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं और ९ चरणों के मिलने से एक राशि बनती है। २७ नक्षत्रों के नाम इस प्रकार हैं; १.अश्विनी २.भरणी ३.कृत्तिका ४.रोहिणी ५.मृगशिरा ६.आद्रा ७.पुनर्वसु ८.पुष्य ९.अश्ठेषा १०.मघा ११.पूर्वाफाल्गुनी १२.उत्तराफाल्गुनी १३.हस्त १४.चित्रा १५.स्वाती १६.विशाखा १७.अनुराधा १८.ज्येष्ठा १९.मूल २०.पूर्वाषाढ़ा २१.उत्तरषाढ़ा २२.श्रवण २३.घनिष्ठा २४.शतभिषा २५.पूर्वाभद्रपद २६.उत्तराभाद्रपद एवं २७.रेवती|

भारतीय ज्योतिष के अनुसार, किसी जातक के जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है, वही उस व्यक्ति का जन्म नक्षत्र होता है। मनुष्य का स्वभाव, गुण-धर्म, जीवन शैली जन्म नक्षत्र से जुड़े हुए होते हैं ।

जन्म नक्षत्र की विशेषताएं: मनुष्य का स्वभाव, गुण-धर्म, जीवन शैली जन्म नक्षत्र से जुड़े हुए होते हैं। जिस नक्षत्र में मनुष्य जन्म लेता है वह नक्षत्र उसके स्वभाव और आने वाले जीवन पर अपना प्रभाव अवश्य डालता है। भारतीय ज्योतिष की गणनाओं में महत्वपूर्ण माने जाने वाले सभी नक्षत्रों का विवरण नीचे दिया गया है;

अश्विनी नक्षत्र: अश्विनी नक्षत्र में जन्मे जातक सामान्यतः सुन्दर, चतुर, सौभाग्यशाली एवं स्वतंत्र विचारों वाले और आधुनिक सोच के लिए मित्रों में प्रसिद्ध होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति बहुत ऊर्जावान होने के साथ साथ सदा सक्रिय रहता है। ये लोग सभी से बहुत प्रेम करने वाले, और रहस्यमयी प्रवृत्ति के होते हैं । ये लोग हमेशा अच्छे जीवनसाथी और एक आदर्श मित्र साबित होते हैं।

भरणी नक्षत्र: भरणी नक्षत्र में जन्मे लोग काफी आकर्षक और सुंदर होते हैं, इनका स्वभाव लोगों को आकर्षित करता है। इनके अनेक मित्र होंगे और ये लोग मित्रों में बहुत अधिक लोकप्रिय भी होते हैं। इनके जीवन में प्रेम सर्वोपरी होता है और जो भी ये ठान लेते हैं उसे पूरा करने के बाद ही चैन से बैठते हैं। इनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मान हमेशा बना रहता है।

कृतिका नक्षत्र: कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग आत्म गौरव करने वाले होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मे जातक सुन्दर और मनमोहक छवि वाले होते हैं। इन लोगों का व्यक्तित्व राजा के समान ओजपूर्ण एवं पराक्रमी होता है । ये तेजस्वी एवं तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी, स्वाभिमानी, तुनक मिजाजी और बहुत उत्साहित रहने वाले होते हैं।

रोहिणी नक्षत्र: रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चंद्रमा होता है और चंद्रमा के प्रभाव के कारण ये लोग बहुत कल्पनाशील और चंचल स्वभाव के होते हैं | ये लोग स्वभाव से बहुत 'मिलनसार तो होते ही हैं लेकिन साथ साथ दूसरों की गलतियां ढूँढते रहते हैं।

मृगशिरा नक्षत्र: इस नक्षत्र के जातक स्वभाव से बहुत साहसी, दृढ़ निश्चय वाले चतुर एवं चंचल स्वभाव के, अध्ययन में अधिक रूचि, माता पिता के आज्ञाकारी और सदैव साफ़ सुथरे आकर्षक वस्त्र पहनने वाले होते हैं | इनका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक होता है, ये लोग बुद्धिमान होने के साथ साथ मानसिक रूप से भी मजबूत होते हैं।

आद्रा नक्षत्र: आद्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोगों की अध्ययन में रूचि अधिक होती है और इन्हें किताबों से विशेष

लगाव रहता है। ये लोग सदैव ही अपने आसपास की घटनाओं के बारे में जागरूक रहते हैं और व्यापार करने की समझ इनकी महान विशेषता है। ये लोग दूसरों का दिमाग पढ़कर काम निकलवाने में माहिर होते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र: इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के भीतर दैवीय शक्तियां होती हैं। इन पर कोई विपत्ति आती है तो कोई अदृश्य शक्ति इनकी सहायता करने अवश्य आती है। ये लोग काफी मिलनसार और प्रेमपूर्वक व्यवहार रखने वाले होते हैं।

पुष्य नक्षत्र: पुष्य नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग दूसरों की भलाई के लिए सदैव तैयार रहते हैं और इनके भीतर सेवा भावना भी बहुत प्रबल होती है | ये बहुत परिश्रमी होते हैं और अपनी मेहनत के बल पर धीरे धीरे ही सही तरक्की हासिल कर ही लेते हैं।

अश्लेषा नक्षत्र: अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों की आँखों एवं वचनों में विशेष आकर्षण होता है। ये लोग कुशल व्यवसायी भी होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मे जातक बहुत चतुर बुद्धि के होने के कारण आसानी से दूसरों का मन पढ़कर उनसे अपना काम निकलवा सकते हैं।

मघा नक्षत्र: इस नक्षत्र वाले जातक के भीतर ईश्वरीय आस्था बहुत अधिक होती है। इनके भीतर स्वाभिमान की भावना प्रबल होती है और बहुत ही जल्दी इनका दबदबा भी कायम हो जाता है| ये कर्मठ होने के कारण किसी भी काम को जल्दी से जल्दी पूरा करने की कोशिश करते हैं। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रायः अपने पौरुष और पुरुषार्थ के प्रदर्शन के लिए जाने जाते हैं।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र: पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति बहुत ही भाग्यशाली होते हैं। ये लोग नैतिकता और ईमानदारी के रास्ते पर चलकर ही अपना जीवन व्यतीत करना पसंद करते हैं। ये लोग किसी भी तरह के विवाद या लड़ाई झगड़े में पड़ना पसंद नहीं करते हैं। इनके पास धन की मात्रा अच्छी खासी होती है जिसकी वजह से ये भौतिक सुखों का आनंद उठाते हैं।

उ.फाल्गुनी नक्षत्र: इस नक्षत्र में जन्में जातक दूसरों के इशारों पर चलना पसंद नहीं करते और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भरपूर प्रयास करते हैं । इस नक्षत्र में जन्मे लोग समझदार, बुद्धिमान, युद्ध विद्या में निपुण होते हैं। नेतृत्व के गुण इनके अंदर जन्म से ही होते हैं, सरकारी क्षेत्र में भी इनको सफलता मिलती है।

हस्त नक्षत्र: हस्त नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक संसार को जीतने और उस पर शासन करने का पूरा पूरा सामर्थ्य एवं शक्ति रखते हैं। इन्हें हर प्रकार की सुख-सुविधाएं मिलती हैं और इनका जीवन आनंद में व्यतीत होता है। दृढ़ता और विचारों की स्थिरता इनको आम आदमी से भिन्नता और श्रेष्ठता प्रदान करती है।

चित्रा नक्षत्र: इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति बलिष्ठ शरीर वाले व साहसी होते हैं। ये लोग आकर्षक व्यक्तित्व वाले एवं शारीरिक रूप से संतुलित मनमोहक एवं सुन्दर आँखों वाले, साज-सज्जा को पसंद करने वाले होते हैं।

स्वाति नक्षत्र: स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक का स्वभाव और आचरण स्वच्छ होता है । ये लोग एक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं| ये लोग राजनीति में बहुत रूचि रखते हैं और अपने प्रतिद्वंदियों पर हमेशा जीत हासिल करते हैं।

विशाखा नक्षत्र: विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति शारीरिक श्रम के स्थान पर मानसिक कार्यों को अधिक मानते हैं| ये लोग मानसिक रूप से सक्षम व्यक्ति होते हैं और कठिन से कठिन कार्य को भी अपनी सूझ-बूझ से कर लेते हैं। अपनी बुद्धि के प्रयोग से सभी को पराजित करते हैं| इनका सामाजिक क्षेत्र भी बहुत विस्तृत होता है । ये लोग महत्वाकांक्षी होते हैं और अपनी हर महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए बहुत परिश्रम करते हैं।

अनुराधा नक्षत्र: इस नक्षत्र में जन्मे लोग अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर चलना पसंद करते हैं। ये लोग अक्सर अपने गुस्से को नियंत्रित नहीं कर पाते इस कारण इन्हें कई बार बड़ी हानि उठानी पड़ती हैं । ये लोग अपने दिमाग से ज्यादा दिल से काम करते हैं, और अपनी भावनाओं को छिपाकर नहीं रख पाते हैं ।

ज्येष्ठा नक्षत्र: ज्येष्ठा नक्षत्र के जातक दृढ़ निश्चयी और मज़बूत व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। शारीरिक रूप से भी गठीले और मज़बूत होते हैं। इनकी दिनचर्या बहुत ही अनुशासित और सुव्यवस्थित होती है। खुली मानसिकता वाले ये लोग सीमाओं में बंधकर रहना पसंद नहीं करते हैं ।

मूल नक्षत्र: मूल नक्षत्र का जातक के जीवन सुख समृद्धि के साथ बीतता है। ये लोग धन की कमी न होने के कारण ऐश्वर्य पूर्ण जीवन जीते हैं। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के परिवार को इनके दोष का भी सामना करना पड़ता है। ये कोमल हृदयी परन्तु अस्थिर दिमाग के व्यक्ति होते हैं।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र: पूर्वाषाढ़ा में जन्म लेने वाले जातक थोड़े उग्र स्वभाव के होने के साथ कोमल हृदयी होते हैं। ये लोग ईमानदार, प्रसन्नचित, कला, सहित्य और अभिनय प्रेमी, अच्छे दोस्त और आदर्श जीवनसाथी होते हैं| ऐसे लोग जीवन में सकारात्मक विचारधारा से अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं| परन्तु अपनी चंचल बुद्धि के कारण कभी-कभी अनैतिक कार्यों में भी लिप्त हो जाते हैं।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र: उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक ऊँचे कद, गठीले शरीर, चमकदार आँखे, चौड़े माथे और गौरवर्ण के होते हैं। ये लोग मृदुभाषी और सभी से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने वाले स्वतंत्र व्यक्ति होते है। इनकी ईश्वर में बहुत आस्था होती है, एवं विवाह उपरान्त जीवन में अधिक सफलता मिलती है।

श्रवण नक्षत्र: इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोगों में कई विशेषताएं होती हैं। ये लोग मध्यम कद काठी परन्तु प्रभावी और आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। ये लोग कभी अनावश्यक खर्च नहीं करते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र: धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मा जातक सभी गुणों से समृद्ध होकर जीवन में सम्मान और प्रतिष्ठा पाता है । ये लोग काफी ऊर्जावान होते हैं और उन्हें खाली बैठना बिल्कुल पसंद नहीं होता । इन्हें किसी और को अपने नियंत्रण में रखना अच्छा लगता है और ये अधिकार भावना भी रखते हैं।

शतभिषा नक्षत्र: शतभिषा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक बहुत साहसी एवं मजबूत विचारों वाले होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मे लोग स्वच्छंद विचारधारा के होते हैं जो साझेदारी की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना पसंद करते हैं। ये लोग अत्यधिक सामर्थ्य, स्थिर बुद्धि और उन्मुक्त विचारधारा के होते हैं।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र: इस नक्षत्र में जन्मे जातक सत्य और नैतिक नियमों का पालन करने वाले होते हैं। साहसी, दूसरों की मदद करने वाले, मिलनसार, मानवता में विश्वास रखने वाले, व्यवहार कुशल, दयालु और नेक दिल होने के साथ-साथ खुले विचारों वाले होते हैं। ये लोग अपने आदर्शो और सिद्धांतों पर ही आजीवन चलना पसंद करते हैं।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र: इस नक्षत्र में जन्मे लोग बहुत यथार्थवादी और सत्य को समझने वाले होते हैं । व्यापार हो या नौकरी, इनका परिश्रम इन्हें हर स्थान पर सफलता प्राप्त करवाता है। ये लोग त्याग भावना वाले, स्वभाव से एक दयालु और धार्मिक प्रवृति के होते हैं। ये लोग समाज में एक धार्मिक व्यक्ति, एवं मानव प्रेमी के रूप में प्रख्यात होते हैं।

रेवती नक्षत्र: रेवती नक्षत्र में जन्मे जातक निश्चल प्रकृति के होते हैं। वे साहसिक कार्य और पुरुषार्थ प्रदर्शन के लिए सदा ही लालायित रहते हैं। परंपराओं और मान्यताओं को लेकर ये लोग रूढ़िवादी होने के बाद भी अपने व्यवहार में लचीलापन रखते हैं | इनकी शिक्षा का स्तर बहुत ऊंचा होता है। नक्षत्र के संयोग से बनने वाली १२ राशियों के नाम इस प्रकार है:

१.मेष २.वृषभ ३.मिथुन ४.कर्क ५. सिंह ६.कन्या ७.तुला ८.वृश्चिक ९.धनु १०.मकर ११ कुम्भ एवं १२.मीन राशि ।

राशियों के अनुसार स्वभाव:

मेष राशि:- मेष राशि के जातक नेतृत्व गुणों से परिपूर्ण होते हैं और हमेशा पहल करने के लिए तत्पर रहते हैं। मेष का स्वामी मंगल ग्रह, पराक्रम और उत्साह का प्रतीक है, जिससे ये जीवन में साहस से आगे बढ़ते हैं |

वृषभ राशि:- वृषभ राशि के लोग सहनशील और धैर्यवान होते हैं, जो स्थिरता के साथ कार्य करते हैं। उनका स्वभाव ठंडा होता है और वे निर्णय लेने में संकोच कर सकते हैं|

मिथुन राशि:- मिथुन राशि के लोग स्थिरता पसंद नहीं करते | ये कलात्मक कार्यों और पढ़ाई में कुशल होते हैं, इनकी सोच सकारात्मक और नकारात्मक दोनों होती है और ये बातचीत में चतुर होते हैं।

कर्क राशि:- कर्क राशि के व्यक्ति भावुक और चंचल होते हैं, जिनमें संयम की कमी होती है और ये लोग धार्मिकता में रुचि रखते हैं ।

सिंह राशि:- ये नेतृत्व करने में सक्षम होते हैं और आमतौर पर एक जगह टिक कर काम करते हैं । उनका स्वाभिमान और प्रभावशाली व्यक्तित्व होता है, और वे बड़े कामों से डरते नहीं हैं।

कन्या राशि:- कन्या राशि के जातक समझदार, धैर्यवान और शांत स्वभाव के होते हैं। कठिन परिस्थितियों में ये घबराते नहीं हैं । इनकी सोच में सकारात्मकता और नकारात्मकता दोनों होती हैं।

तुला राशि:- तुला राशि के जातक सौम्य, भावुक और घूमने-फिरने के शौकीन होते हैं । इनकी कला और सुंदरता के प्रति रुचि होती है और ये न्यायप्रिय भी होते हैं।

वृश्चिक राशि:- वृश्चिक राशि के जातक स्थिर प्रवृत्ति के होते हैं और बदला लेने में पीछे नहीं हटते है। इनके अन्दर प्रतिशोध की भावना ज्यादा होती है। यह जिद्दी, परिश्रमी, ईमानदार और साहसी होते हैं, और अपने निर्णय खुद लेते हैं।

धनु राशि:- धनु राशि के व्यक्ति ज्ञानी और समझदार होते हैं, लेकिन जल्दी गुस्सा करते हैं। ये लोग धार्मिक और परोपकारी होते हैं, और निर्णय लेने से पहले नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं पर विचार करते हैं।

मकर राशि: - मकर राशि के जातक शांत, धैर्यवान और सहनशील होते हैं, लेकिन इनमें लोभ की प्रवृत्ति भी होती है। ये गहन विचार करने वाले और क्षमाशील होते हैं, साथ ही अच्छे व्यापारी भी होते हैं।

कुम्भ राशि:- कुम्भ राशि के जातक शांत, कल्पनाशील और विचारों में खोए रहते हैं । ये दयावान, निस्वार्थ होते हैं, साथ ही देश-विदेश घूमने के शौकीन भी। ये दूसरों के प्रति दयाभाव रखते हैं और परोपकार में तत्पर रहते हैं।

मीन राशि:- मीन राशि के जातक गंभीर, बुद्धिमान और धार्मिक होते हैं । मीन राशि वाले जातक परोपकारी, सत्यप्रिय और उच्चाकांक्षी होते हैं। उनको स्वाभिमान और प्रतिष्ठा का ख्याल रहता है। ये बुद्धिजीवियों के बीच रहना पसंद करते हैं और हर परिस्थिति को आसानी से सुलझाने की क्षमता रखते हैं।

ज्योतिष में ९ ग्रहों सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु का उपयोग किया जाता है। राहु और केतु छाया ग्रह माने जाते हैं और इन्हें बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। ग्रहों का शुभ फल दायक भाव:

- सूर्य: प्रथम, द्वितीय, पंचम, नवम, दशम व् एकादश भाव।
- चन्द्रमा: प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, दशम व् एकादश भाव।
- मंगल: तृतीय, षष्ठ, अष्ठम व् दशम भाव।
- बुध: प्रथम, तृतीय, दशम व् एकादश भाव।
- गुरु: द्वितीय, पंचम, नवम व् एकादश भाव।
- शुक्र: प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम व् एकादश भाव ।
- शनि: तृतीय, षष्ठ, अष्ठम व् एकादश भाव।
- राहू: द्वितीय, अष्ठम व् द्वादश भाव ।
- केतु: षष्ठ, अष्ठम व् द्वादश भाव ।

ज्योतिष वास्तव में एक ऐसी विद्या है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व, स्वभाव, गुण, स्वास्थ्य, आय, धनसम्पत्ति, साहस, सहोदर, माता-पिता, सुख-दुख, विद्या, संतति, स्पर्धा, शत्रु, रोग, जीवनसाथी, व्यापार के भागीदार, संघर्ष, कठिनाइयां, विरासत, भाग्य, धर्म, कर्मक्षेत्र-व्यवसाय, हानि-लाभ, मित्र-समाज, मोक्ष, मृत्यु आदि जीवन के अनेकानेक पहलुओं को उदघाटित करती है।

ज्योतिष एक प्रामाणिक और सैद्धांतिक विषय है, अंधविश्वास के विपरीत ज्योतिष एक विज्ञान है, जो खगोलीय पिंडों और मानव अनुभवों के बीच संबंधों की व्याख्या करता है। यह व्यक्तित्व लक्षणों, शक्तियों और संभावित चुनौतियों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो आत्मनिरीक्षण और व्यक्तिगत विकास के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है।

ज्योतिष के अनुसार, व्यक्ति के पिछले जन्मों के कर्म इस जन्म के अनुभवों और परिस्थितियों को निर्धारित करते हैं। अच्छे कर्मों का फल अच्छे अनुभव और सुख प्रदान करता है, जबकि बुरे कर्म दुख और कठिनाइयों का कारण बनते हैं।

व्यक्ति को अपनी कार्यप्रणाली के प्रति जागरूक रहना चाहिए क्योंकि इससे उसके भविष्य का निर्धारण होता है। इस प्रकार, ज्योतिष न केवल कर्मों की समझ प्रदान करता है, बल्कि आने वाले समय की दिशा को भी स्पष्ट करता है। ज्योतिष में यह विश्वास किया जाता है, कि व्यक्ति अपने कर्मों के माध्यम से अपने भाग्य को बदल सकता है। अच्छे कर्म करने से न केवल वर्तमान में सुख मिलता है, बल्कि भविष्य में भी अच्छे फल मिलते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण का धृतराष्ट्र को उपदेश

सिकंदर कुमार
(लेखापरीक्षक)

कुरुक्षेत्र का युद्ध प्रारम्भ होने ही वाला था। महाराज धृतराष्ट्र, हस्तिनापुर के राजमहल में बैठकर अत्यन्त व्याकुल थे। वे जन्म से अंधे थे, किन्तु उससे भी बड़ी अंधता थी – उनके हृदय में पुत्र–मोह की अंधता। उनका मन बार–बार संजय से युद्ध का समाचार पूछने को आतुर था। उसी समय संजय ने उन्हें भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश सुनाया, जो उन्होंने धर्म की रक्षा हेतु प्रेषित किया था।

श्रीकृष्ण का प्रारम्भिक उपदेश- श्री कृष्ण बोले "हे महाराज धृतराष्ट्र"! आपका जीवन एक परीक्षा है। जन्म से नेत्रहीन होना दोष नहीं है, परंतु धर्म के प्रति अंधा होना सबसे बड़ा दोष है। मनुष्य यदि आँखें न होते हुए भी सत्य को पहचान ले, तो वह धर्मात्मा कहलाता है। किंतु यदि आँखें होते हुए भी धर्म को न पहचाने, तो वह अधर्म का साथी बन जाता है। आप जानते हैं कि पांडव आपके ही भाई के पुत्र हैं। उनके पिता पांडु ने अल्पायु में ही संसार त्याग दिया था। उन अनाथ बालकों को आपने अपने आश्रय में पाला, किन्तु जब वे बड़े होकर अपने अधिकार की माँग करने लगे, तब आपके पुत्र दुर्योधन ने छल और कपट से उन्हें वनवास दिया। क्या यह राजधर्म है? क्या यह न्याय है?- सभा में द्रोपदी का अपमान हुआ, धर्मराज युधिष्ठिर से छलपूर्वक द्यूत खेलवाया गया, और अपमानित कर पांडवों को निर्वासन में भेजा गया। उस समय यदि आप राजा होकर न्याय करते, तो यह युद्ध कभी उत्पन्न न होता। परंतु आप मौन रहे। मौन रहना भी अधर्म का ही साथ है।" धर्म और अधर्म का भेद- "हे राजन्!" धर्म और अधर्म सदा आमने–सामने खड़े रहते हैं। धर्म वह है जो सबके कल्याण के लिए हो, और अधर्म वह है जो केवल लोभ, अहंकार और स्वार्थ से प्रेरित हो। आपका पुत्र दुर्योधन अहंकार और लोभ में अंधा है। वह राज्य को अपने स्वार्थ के लिए पाना चाहता है। किंतु स्मरण रखिए – '**धर्मो रक्षति रक्षितः**।' जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है! जो धर्म का त्याग करता है, उसका नाश निश्चित है!! आप यदि आज भी धर्म का पक्ष लेंगे, तो भविष्य सुरक्षित रहेगा। किन्तु यदि आप पुत्र– मोह में बँधकर दुर्योधन का साथ देंगे, तो यह युद्ध आपके सौ पुत्रों का सर्वनाश कर देगा। आप शेष जीवन केवल शोक और पश्चाताप में बिताएँगे।" श्री कृष्ण आगे बोले– "हे धृतराष्ट्र"! मैं जानता हूँ कि पिता का हृदय अपने पुत्रों से गहरा जुड़ा होता है। परंतु पिता का सच्चा कर्तव्य यही है कि वह अपने पुत्र को धर्म के मार्ग पर चलाए। यदि पुत्र अधर्म पर चले और पिता मौन रहे, तो उस अधर्म का पाप पिता को भी भोगना पड़ता है। आप कहते हैं कि दुर्योधन बलवान है, उसके साथ भीष्म, द्रोण और कर्ण जैसे महारथी हैं। किंतु यह मत भूलिए कि उनके हृदय में धर्म का संदेह है। वे जानते हैं कि पांडव धर्मात्मा हैं। वे केवल कर्तव्य–बंधन में बँधे हैं, अन्यथा धर्म सदा पांडवों के साथ है। स्मरण रखिए, धर्म पर विजय संभव नहीं। चाहे सेना कितनी ही बड़ी हो, चाहे मित्र कितने ही शक्तिशाली हों, यदि साथ धर्म नहीं है तो पराजय निश्चित है।" श्रीकृष्ण का गहन तर्क- "हे महाराज! यह संसार नश्वर है। राज्य, धन, पुत्र, परिवार – सब क्षणिक हैं। मृत्यु के पश्चात् न कोई राज्य साथ जाता है, न धन, न ही पुत्र। केवल मनुष्य के कर्म ही उसके साथ जाते हैं। आपके जीवन का निर्णय आने वाली पीढ़ियों को स्मरण रहेगा। यदि आप धर्म का साथ देंगे, तो लोग आपको उस राजा के रूप में स्मरण करेंगे जिसने समय रहते धर्म स्वीकार किया। किन्तु यदि आप मोहवश दुर्योधन का पक्ष लेंगे, तो आपका नाम इतिहास में उस अंधे राजा के रूप में अंकित होगा जिसने सत्य देखा परंतु उसे स्वीकारने का साहस न किया। सोचिए, क्या आप चाहते हैं कि भविष्य में लोग कहें – 'धृतराष्ट्र वह राजा था जिसने अपने पुत्रों के मोह में आकर पूरे वंश का नाश कर दिया।' या फिर यह कहें – 'धृतराष्ट्र वह राजा

था जिसने अंततः धर्म का साथ देकर अपने वंश को विनाश से बचा लिया।'" धृतराष्ट्र की प्रतिक्रिया- धृतराष्ट्र यह वचन सुनकर काँप उठे। उन्होंने धीमे स्वर में कहा– "हे माधव! आपके वचन सत्य हैं। मेरे मन में भी यह ज्ञान है कि पांडव धर्मात्मा हैं और दुर्योधन का मार्ग अधर्म का है। परंतु मैं पुत्र–मोह में बँधा हूँ। मेरे सौ पुत्र हैं, और मेरा हृदय उन्हें कष्ट में नहीं देख सकता। मैं जानता हूँ कि युद्ध से नाश होगा, किंतु उन्हें रोकने का साहस मुझमें नहीं है।" श्री कृष्ण का अंतिम संदेश- श्री कृष्ण ने गम्भीर स्वर में कहा – **"हे धृतराष्ट्र! यही आपकी दुर्बलता आपके वंश का विनाश करेगी। पिता का धर्म केवल पुत्र के सुख में नहीं है, बल्कि उसके चरित्र निर्माण में है। जो पिता पुत्र के अपराध को ढकता है, वह पुत्र के पाप का भी भागी होता है।**

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" श्लोक २.४७ (2.47) और

"विहाय कामाण्यः सर्वान्पुमंशचरति निष्स्पृहः" श्लोक २.७१ (2.79) जैसे श्लोकों में वर्णित है।

- **कर्मयोग (निष्काम कर्म)- "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥"** भगवद गीता, श्लोक २.४७ (2.47) अर्थ- तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, कर्म के फलों में कभी नहीं। तुम कर्मफल का हेतु मत बनो, और तुम्हारी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो।
- **आत्म-ज्ञान (आत्मा की अमरता)- "नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥"** भगवद गीता, श्लोक २.२३ (2.23) अर्थ- आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, जल गीला नहीं कर सकता और वायु सुखा नहीं सकती। आत्मा अविनाशी है।
- **इच्छाओं से मुक्ति एवं शांति- "विहाय कामाण्यः सर्वान्पुमंशचरति निष्स्पृहः। निर्ममो निरहंकार स शांतिमधिगच्छति ॥"** भगवद गीता, श्लोक २.७१ (2.71) अर्थ- जिस व्यक्ति ने सभी इच्छाओं का त्याग कर दिया है, जो निष्काम है, स्वामित्व की भावना से रहित है और अहंकार से मुक्त है, वही वास्तविक शांति को प्राप्त करता है।
- **धर्म की स्थापना- "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥"** भगवद गीता, श्लोक ४.७ (4.7) दोहराया गया अर्थ है - हे महाराज, जब भी धर्म की हानि होती है और अधर्म बढ़ जाता है, तब-तब मैं स्वयं को प्रकट करता हूँ। स्मरण रहे कि ये श्लोक दो बार दोहराया गया है, भगवान श्री कृष्ण ने ये श्लोक अर्जुन को भी सुनाया था!
- **ईश्वर में शरणागत होना- "सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः। मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्॥"** भगवद गीता, श्लोक १८.५६ (18.56) अर्थ- जो मेरा आश्रय लेकर सभी कर्म करता है, वह मेरी कृपा से उस शाश्वत, अविनाशी परम पद को प्राप्त कर लेता है।

श्री कृष्ण का महाराज धृतराष्ट्र को आखरी उपदेश- महाराज धृतराष्ट्र बोले "हे कृष्ण, हे वासुदेव,"! जब आप पूरा ब्रह्मांड है तो ये महाभारत क्यों हुई? ऐसा मैंने क्या किया कि मुझे अपने 100 पुत्र गवाने पड़े? जब कि मै हस्तिनापुर का राजा हूँ! किसी भी साधन की कमी नहीं थी! न सुख कौरवों को मिला, न पांडवों को मिला! मैं तुम्हारी लीला को समझ नहीं पा रहा हूँ! बाद में गांधारी धृतराष्ट्र की पत्नी ने कहा "हे कृष्ण, हे वासुदेव,"! महाराज धृतराष्ट्र को इस जन्म सुख क्यों नहीं नसीब हुआ? महाराज धृतराष्ट्र और भगवान श्री कृष्ण जी की इस पर बहुत लम्बी वार्तालाप चलती है, आखिर में भगवान श्री कृष्ण ने विदुर महाराज धृतराष्ट्र के सलाहकार से महाराज धृतराष्ट्र के सिर से मुकट उतारने के लिए कहा, जैसे ही विदुर ने महाराज धृतराष्ट्र के सिर से मुकट हटाया तब भगवान श्री कृष्ण ने अपना हाथ

धृतराष्ट्र के सिर पर रखा और धृतराष्ट्र को 100 जन्म पीछे ले गए, भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि धृतराष्ट्र ये तुम्हारा 100 जन्म पीछे और पहला जन्म है जो एक बालक रूप में खेल रहे हो, खेल-खेल में तुमने एक सुंदर पक्षी का बच्चा पकड़ा और उस बच्चे की आखों में कांटे चुभा दिए जिससे उस बच्चे की तड़प कर मौत हो गयी, बाद में उस बच्चे की माँ ने तुम्हे श्राप दिया कि तुम्हारा जन्म भी बिना दिखाई देने वाला होगा और तुम्हें भी अपने पुत्रों को खोना पड़ेगा, इस तरह उस पक्षी के बच्चे की माँ ने अपने प्राण त्याग दिए, भगवान कृष्ण कहते हैं कि "हे, महाराज धृतराष्ट्र!" इस तरह तुम्हे 100 जन्म के बाद अंधे का जन्म मिला है और तुम जीवन भर पश्चाताप की ज्वाला में जलते रहे। **इसी तरह पांडवों को सुख नसीब नहीं हुआ जिसका हमने इससे पिछली हिंदी सुगंधा के लेख "भगवान और इन्सान के बीच दीवार" में उल्लेख किया है, भगवान कृष्ण ने "जुआ- मदिरा के सेवन" पर अधिक चर्चा की है, जिससे मनुष्य की सांसारिक यात्रा समाप्त हो जाती है और वह अपने वंश व कुल का भी सर्वनाश कर देता है! जो मनुष्य ऐसे लोगों का संग करते हैं वह स्वयं भी बर्बाद हो जाते हैं**, भगवान कृष्ण बोले "हे, महाराज धृतराष्ट्र" मैं हर कण में विराजमान हूँ, पेड़, पौधे, जानवर, पक्षी, हवा, अग्नि, पर्वत, नर, नारी, सागर आदि पूरे ब्रह्मांड में विराजमान हूँ! मैं ही इस ब्रह्मांड को जन्म देता हूँ, मैं ही इस ब्रह्मांड का पालनहार हूँ, मैं ही इस ब्रह्मांड का विनाश कर सकता हूँ! उदाहरण के तौर पर वर्तमान समय में वृक्षों की कटाई ने बेहद ही भयानक प्रलय ला दी है।

धृतराष्ट्र ने प्रार्थना की कि भगवन्! मेरे नेत्रों का तिरोधन हो चुका है परन्तु आज मैं आपसे पुन: दोनों नेत्र मांगता हूं। केवल आपका दर्शन करना चाहता हूं आपके सिवा और किसी को मैं नहीं देखना चाहता। तब महाबाहु जनार्दन ने धृतराष्ट्र से कहा, ''कुरुनंदन! आपको दो अदृश्य नेत्र प्राप्त हो जाएं।''इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से उनके विश्वरूप का दर्शन करने के लिए धृतराष्ट्र को भी नेत्र प्राप्त हो गए। उस समय भगवान श्रीकृष्ण के विराट रूप धारण करने से सारी पृथ्वी डगमगाने लगी, समुद्र में खलबली मच गई और समस्त भूपाल अत्यंत विस्मित हो गए। उस समय सभा भवन में भगवान श्रीकृष्ण का वह परम आश्चर्यमय रूप देखकर देवताओं की दुन्दुभियां बजने लगीं और उनके ऊपर फूलों की वर्षा होने लगी। तदनन्तर शत्रुओं का दमन करने वाले श्रीकृष्ण ने उस दिव्य, अद्भुत एवं विचित्र ऐश्वर्य को समेट लिया। इस तरह भगवान ने अपने विराट रूप में धृतराष्ट्र को दर्शन दिए!

भरोसा

तुषार कान्ति सिन्हा
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

मानव के जीवन मे एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है -भरोसा।भरोसा अहम है या वहम यह एक पहेली है।कुछ भरोसे ऐसे हैं जो अटल है टूटते नहीं है, उनकी विश्वसनियता और नियति निश्चित है जैसे सूरज का उगना, रात और दिन का होना,वहीं कभी किसी पर भरोसा करके धोख़ा हो जाता है अगला भरोसे को तोड़ देता है, यहाँ भरोसा वहम बन कर दम तोड़ देता है।भरोसे से आत्म बल आता है।बच्चे को खिलाते समय माँ बच्चे को हवा मे उछाल देती है।बच्चा डरने के बजाय हँसता है क्योंकि उसे अपनी माँ पर पूरा भरोसा है कि वह उसे पकड़ लेगी और जमीन पर गिरने नही देगी।कभी भरोसा दुविधा पैदा करता है जल्द ही किसी को किसी पर भरोसा नही होता है ,भरोसे की छाँव मे वह शंकित और किंकर्तव्य-विमूढ हो जाता है।उसे पता नही होता है कि आगे क्या होगा, इस तरह भरोसा कायर और डरपोक बना देता है।भरोसे पर रह कर मनुष्य निर्बल हो जाता है,आत्म शक्ति मे कमी आ जाती है।भाग्य भरोसे व्यक्ति भूखा रह जाता है।भरोसा कभी दुविधा तो कभी विविधा बन कर आता है।भरोसा दिलों को जोड़ता है तो दिलों को तोड़ता भी है।एक भरोसे के तहत ही विवाह मे गठबंधन होता है और जीवन भर साथ निभाया जाता है,वहीं भरोसा मतभेद बन कर पति-पत्नी का तलाक़ करा देता है।एक बाप अपने बेटे पर अपने जीवन की सारी खुशियाँ न्योछावर कर देता है,उसे भरोसा है कि उसका बेटा बुढ़ापे में उसका सहारा बनेगा।कुछ बेटे भरोसे को निभाते हैं तो कुछ बेटे बूढ़े माँ बाप को वृद्ध आश्रम मे छोड़ आतें हैं, तो भरोसा यदि बल है तो छल भी है।भरोसा एक गलती है जिसे माफ नही किया जा सकता,भरोसा तोड़ने वाले से नफरत पैदा हो जाती है वह दुश्मन बन जाता है।भरोसा एक शक्ति है वह संघटन तैयार करती है, जनता पर भरोसा कर लोग मंत्री बन जाते हैं।नेता पर भरोसा कर जनता वोट दे देती है।भरोसा अपने होने का हक जताता है।भरोसे के अभाव मे अपने को भी अपना कहने मे शक होता है।यही भरोसे के दो रूप हक और शक है।भरोसा हक दिलाता है तो कभी शक पैदा करता है । बेशक भरोसा कीमती होता है पर भरोसे में यदि धोख़ा हो जाता है तो उतना ही महंगा पड़ जाता है।भरोसे में शक है और शक पर भरोसा है।"मुझे भरोसा था कि मै मंजिल तक पहुँच जाऊंगा पर रास्ते ने मुझे थका दिया", इस तरह परिस्थिति और वातावरण भरोसे को झंकझोंर देती है।भरोसा लचीला है, टिकता नही है, यह एक कठिन परिस्थिति है । ऐ जिंदगी तेरा क्या भरोसा ?"हादसे गवाह हैं जिंदगी के भरोसे के ।" मै स्वस्थ हूँ कोई बीमारी नही है मुझे, मुझे भरोसा है कि मै अभी नही मारूंगा, तो भरोसे की अपनी कोई गारंटी नही है, पर भरोसा हसरत जरूर पैदा करता है, जीने की राह दिखाता है।सुंदर नारी सज-धज कर आईने मे अपनी सुंदरता देख कर इतराती है पर उसे उसी आईने पर भरोसा नही है सहेलियों से पूछते चलती है कि मै कैसी लग रही हूँ ? भरोसा वह शब्द है जिसके बिना एक पल भी जीना मुश्किल है। "डूबने लगी जब कश्ती तिनके का भरोसा रह गया।" बारिश पर भरोसा करके खेती कर ली, धूप इतनी तेज निकली की फसल सारी मर गई "। भरोसा सब पर नही किया जा सकता है। भरोसा एक आत्म चिंतन है,किसी को पराये पर भरोसा हो जाता है तो किसी को अपने पर भी भरोसा नही होता।राम धनी की उम्र 80 वर्ष की थी।गाँव के एक आयोजन मे उन्हें जाना जरूरी था। राम धनी का छोटा पोता बोला,चलो दादा जी मै आपका हाँथ पकड़ कर पहुंचा देता हूँ, पर रामधनी तैयार नही हुए, बोले तू चला जा मैं नही जाऊंगा। जब उनका पोता चला गया तो उन्होंने धीरे से अपनी लाठी उठाई, उसे प्यार से एक बार चूमा और लाठी के सहारे चल पड़े, उन्हे अपनी औलाद से ज्यादा भरोसा अपनी लाठी पर था।

भारत में हर भाषा का सम्मान है,
पर हिन्दी ईश्वर का वरदान है।

झूठ

तुषार कान्ति सिन्हा
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

झूठ का एक अपना अस्तित्व है,झूठ नही होता तो सत्य की महत्ता खत्म हो जाती। झूठ के पैर नही होते, ये बिन सिर पैर का घोड़ा है, पर चलता बहुत तेज़ है। जब झूठ तेज़ी से भागने लगता है तब सत्य चुप चाप एक कोने मे खड़ा हो जाता है।झूठ सत्य की तरह शांत नही है, वो चतुर चालक है। विषम परिस्थितियों मे झूठ बड़ी सरलता से पिछली गली से निकल जाता है । झूठ मधुर होता है सहज ही लोग झूठ पर यकीन कर लेते हैं। सत्य बड़ा कटु होता हैं। झूठ कर्ण प्रिय होता हैं, किसी की झूठी तारीफ करने पर लोग खुश हो जाते हैं जब कि किसी की कमी का जरा सा बखान करने पर लोग क्रोधित हो जाते हैं। सलीके से बोले गए झूठ पर एतबार करने के लिए लोग मजबूर हो जाते हैं। झूठ बहुत खूबसूरत होता है। मनुष्य, देवता, दानव सभी झूठ बोलतें हैं। महाभारत मे युधिष्ठिर ने कितने खुबसूरत अंदाज़ मे झूठ बोल कर युद्ध को रुकवा दिया था -" युधिष्ठिर ने 'अश्वत्थामा हतः' (अश्वत्थामा मारा गया) ऊंचे स्वर में कहा, लेकिन अपना धर्म (सत्य) बचाने के लिए 'नरो वा कुंजरो वा' (अर्थात मनुष्य या हाथी) बहुत धीमी आवाज में बुदबुदाया।

राजा विराट की सभा मे युधिष्ठिर ने झूठ बोल कर अपना नाम कनक बताया था। चाँद अपने आप में बेहद बदसूरत है जैसा कि वैज्ञानिक बताते हैं और सुंदरता की तुलना चाँद से करते नहीं थकते। मानव का मुखड़ा कहीं चाँद का टुकड़ा हो सकता है क्या?पर लोग कहते हैं "मुखड़ा जैसे चाँद का टुकड़ा,"यह एक सफेद झूठ है, चाँद पर पहाड़ रेत और बड़े-बड़े गड्ढे हैं। 'चाँद सी सूरत' इतना सच्चा झूठ है कि जिस पर लोग भरोसा कर लेते हैं।

सत्य एक है, साच को आंच नही, पर झूठ अनेक है, एक झूठ छिपाने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं ।"झूठी धमकियों से अर्थ की उगाही हो रही थी।लब खामोश थे, मगर आँखो से गवाही हो रही थी। झूठ का प्रभाव टिकाऊ नही है उसे प्रमाणित करना पड़ता है, झूठ पर प्रश्न खड़े हो जाते हैं।कहीं न कहीं झूठ परिलक्षित हो जाता है। झूठे लोग झूठ बोल कर वाही-वाही तो बटोर लेते हैं पर उनकी आत्मा कचोटती है, मन मे ग्लानि होती है। जब लोग झूठ की महिमा गाते हैं और सत्य कोने में रोता है। कलम झूठ की गाथा जब जब गाती है, स्याही तब-तब रो जाती है। "झूठे लोग झूठ बोल कर दरिया पार कर जाते हैं। सच्चे तो झूठे इल्ज़ाम से मर जाते हैं।"इस तरह झूठ बड़ा ही कठोर होता है। झूठ बोल कर कुछ जीत गए।करके भरोसा झूठ का, कुछ टूट गए।" झूठ का प्रारम्भ है वाही-वाही, उसी झूठ का अंत है तबाही।" "मजबूरी मे झूठ को करना पड़ता है बर्दाश्त। साबित करने सत्य को करना पड़ता है दरखास्त।" "सच बोलता हूँ तो रिश्ते नाते हो जाते मुझसे दूर, झूठ बोलने इसलिए हो जाता हूँ मजबूर।" "झूठ एक जादू है जो मरे मे भी जान ला देता है।" "झूठ बोलना एक हुनर है। हर कोई सलीके से झूठ नही बोल पाता। " गर्दिशों मे हँसाते रहा दिलासा तुम्हारा, मायूसी भरा दिन कट गया हमारा, कितना सच्चा निकला झूठ तुम्हारा"।

हिन्दी हमारे देश और भाषा की
प्रभावशाली विरासत है।

- माखनलाल चतुर्वेदी

कठिन राह की सीख : अनुशासन की ताक़त

आयुष अरोड़ा
(लेखा परीक्षक)

कभी-कभी जीवन की सबसे गहरी बातें सीधे शब्दों में नहीं, बल्कि कहानियों के रूप में ज़्यादा आसानी से समझ आती हैं। "अनुशासन" शब्द सुनते ही हमारे मन में कठोरता, नियम और नियंत्रण की छवि उभरती है। लेकिन क्या वास्तव में अनुशासन इतना नीरस है? या यह वह ताक़त है जो हमारे भीतर के बिखरे हुए हिस्सों को जोड़कर हमें हमारी असली क्षमता तक पहुँचाती है?

इस निबंध में मैं अनुशासन की इसी सच्ची शक्ति को समझाने के लिए तीन-चार रूपकात्मक कहानियों का सहारा लूँगा। ऐसी कहानियाँ, जो हमारे रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ी होंगी, पर जिनके भीतर छिपा अर्थ गहराई से हमारी सोच को हिला देगा। हर कहानी अपने आप में एक दृष्टिकोण देगी। कहीं धैर्य की बात होगी, कहीं नियंत्रण की, कहीं आत्म-प्रयास की, और कहीं समर्पण की। लेख के अंत में, मैं इन सभी कहानियों के सूत्रों को एक साथ बुनकर आपके सामने एक अंतिम निष्कर्ष रखूँगा। यह लेख किसी उपदेश की तरह नहीं, बल्कि एक यात्रा की तरह लिखा गया है, जहाँ हर मोड़ पर आप खुद को पहचानेंगे, और अंत तक पहुँचते-पहुँचते महसूस करेंगे कि अनुशासन कोई बंधन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता तक पहुँचने का एक अद्भुत मार्ग है।

कहानी 1: अनुशासन का बीज

एक बार की बात है। गाँव का सूरज अभी-अभी उग रहा था। खेतों में हल्की-हल्की धुंध थी और पक्षियों की चहचहाहट हवा में घुल रही थी। ऐसे ही एक गाँव में रामू किसान रहता था। रामू मेहनती तो था, लेकिन उसमें एक आदत थी कि वह कामों को अक्सर टाल देता। बीज बोने का समय आया। पड़ोसी किसान अपने-अपने खेतों में जल्दी उठकर हल चला रहे थे। लेकिन रामू सोचता कि "अरे, आज तो थकान है, कल से शुरू कर लूँगा।" उसने एक दिन टाल दिया। फिर दूसरे दिन बारिश आई, तो उसने कहा, "आज तो मिट्टी गीली है, कल देख लूँगा।" दिन बीतते गए। बीज बोने का सही समय निकल गया।

कुछ महीनों बाद पड़ोसियों के खेत हरे-भरे खड़े थे, पौधे लहलहा रहे थे और रामू के खेत में मिट्टी ही मिट्टी थी। वह उदास होकर सोचने लगा कि "मेरे खेत ने ही साथ नहीं दिया।" लेकिन गाँव का एक बुजुर्ग उसके पास आया और बोला, "रामू, खेत ने साथ क्यों नहीं दिया, तुम ये सोच रहे हो? असल में तुमने खेत का साथ नहीं दिया। खेती में समय ही सबकुछ है। जब बोना था तब बोओ, जब पानी देना है तब दो। खेत तुम्हारे मन का इंतज़ार नहीं करेगा। यही अनुशासन है बेटा, समय पर सही काम करना।" रामू को एहसास हुआ कि गलती उसकी थी, खेत की नहीं।

रामू की कहानी सिर्फ़ खेत की नहीं, हम सबकी ज़िंदगी की है। हम सबके भीतर ऐसे कई "खेत" हैं। हमारी पढ़ाई, हमारी नौकरी, हमारा स्वास्थ्य, हमारे रिश्ते। लेकिन अक्सर हम सोचते हैं कि "अरे, कल से शुरू करेंगे।" कल कभी आता ही नहीं। और फिर जब फसल नहीं मिलती, तो हम दूसरों या हालात को दोष देने लगते हैं।

अनुशासन क्या है?

लोग अक्सर अनुशासन को एक "जेल" की तरह देखते हैं कि मानो यह आज़ादी छीन लेता हो। लेकिन सच्चाई अलग है। अनुशासन ही असली आज़ादी है। सोचिए, अगर आप अपने मन के गुलाम हैं, तो जब मन करेगा तभी पढ़ेंगे, जब मन करेगा तभी काम करेंगे। लेकिन मन कभी स्थिर नहीं होता। इसलिए बिना अनुशासन के जीवन सिर्फ़ उथल-पुथल और पछतावे से भरा रहता है। अनुशासन का मतलब है मन को साधन बनाना, मालिक नहीं। यह ऐसा है जैसे आप गाड़ी के ड्राइवर हों। गाड़ी (मन) चाहे तेज़ भागना चाहे, चाहे रुकना चाहे, आप ही उसे सही रास्ते पर मोड़ते हैं।

सोचिए अगर आप रोज़ सुबह तय कर लें कि "मैं 15 मिनट पढ़ाई या ध्यान करूँगा।"

शुरुआत में मन टालेगा, कहेगा - "अरे, आज रहने दे।"

लेकिन जैसे ही आप 10–15 दिन लगातार वह 15 मिनट निकाल लेंगे, अचानक आप पाएँगे कि यह आपकी आदत बन गई है। आपका मन अब आपकी बात मानने लगा है।

कहानी 2: अनुशासन की ताक़त

रात का समय था। समुद्र किनारे बसे रामेश्वरम का छोटा-सा घर, मिट्टी का फर्श, खपरैल की छत, और कोने में रखा एक साधारण मिट्टी का दीया जिसकी लौ हवा में थरथरा रही थी। दीये की मद्धम रोशनी में एक नन्हा बालक अपनी स्कूल की किताबें सहेज रहा था। उसका नाम था "अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम"।

घड़ी ने चार बजाए भी नहीं थे कि पिता ने धीरे से पुकारा, "चलो बेटा, अख़बार बाँटने का वक़्त हो गया।" नींद आँखों में थी, पर कदमों में थकान नहीं। वह उठता, चेहरे पर ठंडे पानी के छींटे मारता, और हाथ में अख़बारों की गठरी लेकर पिता के साथ अँधेरी गलियों से होकर निकल पड़ता। सड़कें सुनसान, हवा में नमक की गंध, और समुद्र की लहरों की आवाज़ जैसे किसी अनदेखे अनुशासन का संगीत गुनगुना रही थीं। वह बालक घर-घर अख़बार डालता, फिर सूरज निकलने से पहले लौट आता। स्कूल जाने की तैयारी, दिनभर की पढ़ाई, और शाम को फिर घर की छोटी-मोटी मदद। दिनचर्या कठोर थी, पर शिकायत ज़रा सी भी नहीं। वह नहीं जानता था कि यह छोटी-सी दिनचर्या ही उसके जीवन की रीढ़ बन रही है। वही अनुशासन, जो आगे चलकर उसे भारत का मिसाइल मैन और राष्ट्रपति बनाएगा।

वर्षों बाद जब वह वैज्ञानिक बना, तो उसके सहयोगी कहते कि "कलाम साहब के लिए प्रयोगशाला ही मंदिर है।" वह रोज़ घंटों तक प्रयोगों में डूबे रहते, कभी रॉकेट फटा, कभी सैटेलाइट गिरा, कभी पूरी टीम की मेहनत एक झटके में धुएँ में उड़ गई पर वे न तो निराश हुए, न किसी को दोष दिया। एक बार जब किसी रॉकेट लॉन्च की असफलता पर उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें दुःख हुआ, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "विफलता अंत नहीं होती। यह बस एक नया आरंभ है, अगर तुम अनुशासित रहो।" वह हमेशा कहा करते थे कि "अगर तुम सूरज की तरह

चमकना चाहते हो, तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो।" यह "जलना" किसी यातना का प्रतीक नहीं था, बल्कि नियमितता, आत्म-नियंत्रण और धैर्य का रूपक था। हर सुबह उठकर वही काम, वही अभ्यास, वही जिद, पर हर दिन थोड़ा बेहतर, थोड़ा निखरा हुआ। अनुशासन उनके लिए मजबूरी नहीं, बल्कि भक्ति था। ज्ञान की, कर्म की, और उद्देश्य की भक्ति।

यही कारण था कि उनका जीवन किसी कहानी से कम नहीं लगता। एक साधारण मछुआरे का बेटा, जिसने कभी थकना नहीं सीखा, और जिसने पूरी दुनिया को सिखाया कि सपने वे नहीं जो नींद में देखे जाते हैं, सपने वे हैं जो नींद उड़ा दें। डॉ. कलाम का जीवन हमें यही सिखाता है कि अनुशासन कोई बंधन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता तक पहुँचने की सीढ़ी है। क्योंकि बिना अनुशासन के सपने सिर्फ़ कल्पना रह जाते हैं, और अनुशासन ही उन्हें हक़ीक़त में बदलने की ताक़त देता है।

कहानी 3: तितली और बच्चा

एक छोटा बच्चा बगीचे में खेल रहा था। उसने देखा कि एक तितली का कोकून (प्यूपा) फटा है और तितली बाहर निकलने की कोशिश कर रही है। वह बार-बार पंख फड़फड़ाती, लेकिन बाहर नहीं आ पा रही थी। बच्चा बेचैन हो गया। उसने सोचा कि "कितनी मुश्किल हो रही है इसे, चलो मैं मदद करता हूँ।" उसने नुकीली लकड़ी से कोकून को थोड़ा बड़ा कर दिया ताकि तितली आसानी से बाहर आ सके।

तितली सचमुच बाहर आ गई। लेकिन बाहर आते ही वह ज़मीन पर गिर पड़ी। उसके पंख सूजे हुए थे, कमजोर थे। वह उड़ ही नहीं पाई। कुछ देर बाद उसकी मौत हो गई। बच्चे को बहुत दुःख हुआ। उसने सोचा, "मैंने मदद क्यों की?" तभी उसके दादाजी ने समझाया कि "बेटा, जब तितली संघर्ष करके बाहर निकलती है, तो वही संघर्ष उसके पंखों में ताक़त भरता है। तुमने उसका संघर्ष आसान कर दिया, इसलिए उसके पंख कमजोर रह गए।"

यह कहानी हमें सिखाती है कि संघर्ष और अनुशासन जरूरी हैं। अगर जीवन आसान हो जाए, तो हम उड़ने की ताक़त खो देंगे।

कहानी 4: बाँस की खेती

चीन के एक किसान ने बाँस के बीज बोए। वह रोज़ पानी देता, खाद डालता। पहला साल बीता तो कोई अंकुर नहीं था। दूसरा साल, फिर भी कुछ नहीं। तीसरे साल भी धरती वैसे ही चुप थी। गाँव वाले उसका मज़ाक उड़ाने लगे और कहने लगे कि "अरे पागल! पत्थरों को पानी पिला रहा है?" लेकिन किसान हिम्मत नहीं हारा। चौथे साल भी वही करता रहा। और पाँचवें साल, धरती फटी और छोटा-सा अंकुर निकला। कुछ ही हफ्तों में वह अंकुर 80–90 फीट ऊँचा बाँस बन गया। असल में उन पाँच सालों में बाँस ज़मीन के नीचे अपनी जड़ों को फैला रहा था। बिना मजबूत जड़ों के वह इतनी ऊँचाई पर खड़ा नहीं हो सकता था। अनुशासन भी वैसा ही है। कई साल मेहनत का फल दिखाई नहीं देता। लेकिन अंदर जड़ें मजबूत हो रही होती हैं। और जब समय आता है, तो परिणाम सबको

चकित कर देता है।

कठिन राह ही असली राह

रामू किसान की अधूरी फसल, तितली का अधूरा संघर्ष, बाँस का धैर्य, इन सब कहानियों का सार यही है कि ज़िंदगी अनुशासन के बिना अधूरी है। गांधी ने सत्य का अनुशासन अपनाया, तो साधारण वकील से महात्मा बन गए। कलाम ने समय और मेहनत का अनुशासन अपनाया, तो साधारण मछुआरे का बेटा "मिसाइल मैन" और राष्ट्रपति बन गया। विवेकानंद ने साधना का अनुशासन अपनाया, तो पूरी दुनिया को भारत का संदेश सुनाने लगे। हम और आप भी अलग नहीं हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि उन्होंने कठिन राह चुनी, और हम अक्सर आसान राह ढूँढ़ते रहते हैं। आज की दुनिया में जब हर तरफ़ "shortcut" का शोर है, तुरंत पैसा, तुरंत नाम, तुरंत सफलता। अनुशासन हमें याद दिलाता है कि सच्चा फल धीरे-धीरे पकता है। जैसे बाँस पाँच साल ज़मीन के नीचे जड़ें फैलाता है, वैसे ही अनुशासन हमारी आत्मा में जड़ें जमाता है। तो अब चुनाव आपके हाथ में है, अनुशासन कठिन है, हाँ। लेकिन वही कठिनाई हमें मजबूत बनाती है।

याद रखिए, आलस्य आराम देता है, पर धीरे-धीरे जीवन बर्बाद करता है। अनुशासन मेहनत माँगता है, पर धीरे-धीरे जीवन संवार देता है।

अंतिम आह्वान

जब भी अगली बार आप सोचें, "कल से शुरू करूँगा", तो रामू किसान का खेत याद कीजिए। जब भी लगे कि "संघर्ष क्यों?", तो तितली की मौत याद कीजिए। जब भी लगे कि "मेहनत बेकार जा रही है", तो बाँस का धैर्य याद कीजिए। अनुशासन कठिन राह है, लेकिन वही हमें हमारी मंज़िल तक ले जाती है और अंततः, वही राह "कम चली गई राह" है। जो कठिन तो है, लेकिन जीवन को अर्थ, उद्देश्य और असली सफलता देती है।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।

-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रसन्नता कोई गंतव्य नहीं बल्कि मार्ग है

शिव कुमार
(लेखापरीक्षक)

मानव जीवन की सबसे बड़ी खोज, उसका सबसे बड़ा लक्ष्य और उसकी सबसे गहरी पीड़ा एक ही है प्रसन्नता की खोज। हम सभी एक अंतहीन दौड़ में शामिल हैं। यह दौड़ है- सफलता पाने की, धन कमाने की, सामाजिक मान-सम्मान हासिल करने की और एक आदर्श जीवन स्थापित करने की। हमारा मानना है कि इन सबके प्राप्त हो जाने के बाद एक गंतव्य पर पहुँचेंगे, जिसका नाम है 'प्रसन्नता'। हम सोचते हैं, "जब मैं यह कर लूंगा, वह पा लूंगा, तब मैं सुखी हो जाऊंगा।" किंतु क्या वास्तव में प्रसन्नता कोई गंतव्य है? या फिर यह एक रास्ता है?

यह विचार हमें बताता है कि प्रसन्नता भविष्य में किसी बिंदु पर प्राप्त होने वाली कोई वस्तु नहीं है, बल्कि वर्तमान क्षण में जीने का एक तरीका है। यह कोई लक्ष्य नहीं है जिसे हासिल किया जाए, बल्कि वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम चलते हैं।

प्रसन्नता एक गन्तव्य के रूप मेः एक भ्रम

मानव मन की संरचना ही कुछ ऐसी है कि वह हमेशा भविष्य की ओर देखता है। यही कारण है कि हम प्रसन्नता को भी एक भविष्य की घटना के रूप में देखते हैं और हमारा मन 'यदि-तब' (If-Then) के समीकरण में फंसा रहता है।

उदाहरण- यदि मुझे यह नौकरी मिल जाए, तब मैं प्रसन्न रहूंगा।

यदि मेरा बच्चा प्रथम श्रेणी से पास हो जाए, तब मैं प्रसन्न रहूंगा।

यदि मैं विदेश घूमने जाऊं, तब मैं प्रसन्न रहूंगा।

इस सशर्तता ने हमें एक ऐसे जाल में फंसा दिया है जहाँ प्रसन्नता हमेशा हमारी पहुँच से एक कदम (just one step) दूर रहती है। जैसे ही एक शर्त पूरी होती है, मन तुरंत दूसरी शर्त रख देता है। यह एक अनंत दौड़ है, जैसे किसी खच्चर के सिर के आगे लटकती गाजर, जिसे वह कभी पूरी तरह से प्राप्त नहीं कर पाता।

हमने प्रसन्नता के स्रोतों को अपने बाहर ढूंढ लिया है। हमारी प्रसन्नता हमारी नौकरी, हमारे बैंक बैलेंस, हमारी कार, हमारे सोशल मीडिया लाइक्स और दूसरे लोगों की राय से जुड़ गई है। चूंकि ये बाहरी कारक हमारे नियंत्रण से बाहर हैं और सदैव परिवर्तनशील हैं, इसलिए इन पर आधारित प्रसन्नता भी अस्थिर और क्षणभंगुर हो जाती है।

हमारे आसपास का समाज और मीडिया लगातार यह संदेश देता है कि प्रसन्नता किसी विशेष उत्पाद, पद, या स्थिति को खरीदने या प्राप्त करने से मिलती है। विज्ञापन हमें दिखाते हैं कि एक नई कार खरीदने पर परिवार कितना खुश है, एक नया फेस क्रीम इस्तेमाल करने पर जीवन बदल जाता है। इसने हमारे मस्तिष्क में यह भ्रम पैदा कर दिया है कि प्रसन्नता एक बाहरी उपभोक्ता वस्तु है, न कि एक आंतरिक अवस्था। हमारा मन या तो बीते

हुए कल के पछतावे और यादों में खोया रहता है या फिर आने वाले कल की चिंताओं और योजनाओं में। हम 'अभी' और 'यहाँ' को पूरी तरह से भूल जाते हैं। जब तक हम वर्तमान क्षण में जीना नहीं सीखते, प्रसन्नता एक भ्रम बनी रहेगी। इन सभी कारणों से हम एक ऐसे रास्ते पर चल पड़े हैं जो कहीं नहीं जाता। हम प्रसन्नता के लिए भाग रहे हैं, पर प्रसन्नता तो रास्ते में ही कहीं छूट गई है।

प्रसन्नता ही रास्ता है - वास्तविकता

अब हम उस वैकल्पिक मार्ग की ओर चलते हैं, जो कहता है कि प्रसन्नता कोई गंतव्य नहीं, बल्कि स्वयं रास्ता है।

1. प्रसन्नता एक आंतरिक अवस्था है, बाहरी परिस्थिति नहीं

सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि प्रसन्नता हमारे भीतर से उत्पन्न होने वाली एक मानसिक और भावनात्मक अवस्था है। यह हमारे विचारों, दृष्टिकोण और प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करती है। एक ही परिस्थिति में दो अलग-अलग व्यक्ति अलग-अलग प्रतिक्रिया दे सकते हैं - एक दुखी हो सकता है, दूसरा प्रसन्न। इसका अर्थ है कि प्रसन्नता का स्रोत बाहरी घटना नहीं, बल्कि हमारी उस घटना के प्रति आंतरिक प्रतिक्रिया है। जब हम इसे समझ लेते हैं, तो हमें एहसास होता है कि प्रसन्नता हमारे वश में है, हम इसे किसी भी क्षण चुन सकते हैं।

2. वर्तमान क्षण में निवास

प्रसन्नता का रास्ता केवल और केवल वर्तमान क्षण में ही बसता है। अतीत बीत चुका है, उसे बदला नहीं जा सकता। भविष्य आया नहीं है, उसकी चिंता करना व्यर्थ है। हमारे पास सिर्फ यही पल है, यही क्षण है। जब आप पूरी तरह से 'यहाँ' और 'अभी' में जीते हैं, तो आप चिंता और अफसोस के सभी विचारों से मुक्त हो जाते हैं। एक बच्चा देखिए, वह पल में जीता है। वह जो करता है, उसमें पूरी तरह से डूब जाता है। उसके मन में न अतीत का बोझ है, न भविष्य की चिंता। इसलिए उसके चेहरे पर इतनी निश्छल मुस्कान और आँखों में इतनी चमक होती है। 'प्रसन्नता ही रास्ता है' का अर्थ है, हर पल को पूरी तरह से जीना, उसकी सराहना करना, चाहे वह पल कितना ही साधारण क्यों न हो।

3. यात्रा को गंतव्य से ऊपर रखना

इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम लक्ष्य ही न बनाएं। लक्ष्य जीवन को दिशा देते हैं। किंतु महत्वपूर्ण यह है कि हम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए की जाने वाली यात्रा, उस प्रक्रिया में ही आनंद ढूंढें। उदाहरण के लिए, यदि आपका लक्ष्य एक उपन्यास लिखना है, तो सिर्फ किताब के प्रकाशित होने का इंतजार न करें बल्कि, रोज के लेखन के अनुभव, शब्दों के साथ खेलने, नए विचारों के उभरने में आनंद लें। तब उपन्यास लिखना एक सुखद यात्रा बन जाएगा, न कि एक कष्टदायक संघर्ष। लक्ष्य प्राप्ति तो एक स्वाभाविक परिणाम होगा, मुख्य आनंद तो आपको रोज मिल रहा होगा।

प्रसन्नता के रास्ते पर चलने के व्यावहारिक साधन:

1. कृतज्ञता का अभ्यास

यह शायद सबसे प्रभावशाली अभ्यास है। प्रतिदिन सोने से पहले या सुबह उठकर, उन पाँच से दस चीजों के बारे में सोचिए जिनके लिए आप आभारी हैं। यह आपका ध्यान उन चीजों की ओर ले जाएगा जो आपके पास हैं, उन चीजों से दूर जो आपके पास नहीं हैं। यह अभ्यास आपके मस्तिष्क को सकारात्मकता के प्रति प्रशिक्षित करेगा और तत्काल संतोष की भावना पैदा करेगा। एक कृतज्ञता डायरी बनाएं और रोज उसमें लिखें।

2. सचेतनता और ध्यान

ध्यान का उद्देश्य दिमाग को पूरी तरह खाली करना नहीं, बल्कि उसे एक प्रेक्षक (Observer) बनाना है। रोजाना कुछ मिनट शांत बैठकर अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करें। जब विचार आएँ, उन्हें अनुमान लगाए बिना देखें और वापस सांसों पर आ जाएँ। यह अभ्यास आपको वर्तमान क्षण में रहने की कला सिखाएगा। दिनभर में, किसी भी साधारण काम-जैसे चाय पीना, नहाना, ऑफिस का रास्ता तय करना को पूरी सचेतनता से करने का प्रयास करें। बस उसी काम में डूब जाएँ, पूरी तरह से।

3. छोटी-छोटी चीजों में आनंद खोजना

हम बड़ी उपलब्धियों का इंतजार करते हुए रोजमर्रा के छोटे-छोटे सुखों को नजरअंदाज कर देते हैं। एक अच्छी कॉफी का स्वाद, किसी प्रियजन की मुस्कान, बारिश की बूंदों की आवाज, धूप में खिले एक फूल का रंग, पुराना कोई गाना सुनने का आनंद, एक अच्छी किताब का एक पन्ना-ये सब प्रसन्नता के क्षण हैं। इन्हें पहचानिए और इनका पूरा आनंद उठाइए। यही तो 'प्रसन्नता का रास्ता' है। इन छोटे-छोटे पलों का योग ही एक समृद्ध और सुखी जीवन बनाता है।

4. तुलना का त्याग

"दूसरे के पास मुझसे बेहतर कार है," "दूसरा मुझसे ज्यादा सफल है," "उसका जीवन मेरे जीवन से बेहतर है (खासकर सोशल मीडिया पर)" ये विचार प्रसन्नता के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट हैं। याद रखिए, हर किसी की यात्रा अलग है, हर किसी का संघर्ष अलग है। आप अपनी तुलना सिर्फ़ अपने से कल वाले इंसान से करें। क्या आज आप कल से बेहतर हैं? क्या आप आज कल से थोड़ा ज्यादा जानते हैं, थोड़े ज्यादा अनुभवी हैं? बस इतना ही महत्वपूर्ण है। दूसरों की उपलब्धियों से प्रेरणा लें, ईर्ष्या नहीं।

5. देना और साझा करना

अनेकों मनोवैज्ञानिक शोधों से पता चला है कि दूसरों की मदद करने और उनके साथ साझा करने से मिलने वाली प्रसन्नता, किसी भी भौतिक वस्तु को खरीदने से मिलने वाली प्रसन्नता से कहीं अधिक गहरी, शुद्ध और टिकाऊ

होती है। दया, दान और सेवा, प्रसन्नता के उस रास्ते के महत्वपूर्ण पड़ाव हैं जो हमें स्वार्थ और अहंकार से मुक्त करते हैं। यह हमें एक बड़े उद्देश्य और समुदाय से जुड़ाव का एहसास दिलाता है।

6. स्वयं के साथ मित्रता

अक्सर हम अपने सबसे कठोर आलोचक होते हैं। हम अपनी गलतियों पर अपने आप को कोसते रहते हैं, अपनी कमियों को बढ़ा-चढ़ाकर देखते हैं। प्रसन्नता के रास्ते पर चलने के लिए जरूरी है कि आप अपने आप से दोस्ती करें। अपनी कमजोरियों को स्वीकार करें, अपनी गलतियों से सीखें, और अपने आप से वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप किसी अच्छे मित्र के साथ करेंगे दयालु, सहानुभूतिपूर्ण और स्व-दया सीखें।

7. प्रकृति से जुड़ाव

प्रकृति सबसे बड़ी गुरु है। पेड़ , पहाड़, नदी, समुद्र, आकाश ये सभी पल में जीने का, बिना शर्त होने का और शांत रहने का पाठ पढ़ाते हैं। नियमित रूप से प्रकृति में समय बिताना, बगीचे में काम करना, पक्षियों को देखना, तारों को निहारना ये सभी गतिविधियां हमें हमारे आंतरिक शांति और प्रसन्नता से फिर से जोड़ती हैं।

चुनौतियाँ और सामान्य भ्रांतियाँ

इस मार्ग पर चुनौतियों अवश्य आएंगी। दुख, निराशा, क्रोध, ईर्ष्या और तनाव जीवन का अटूट हिस्सा हैं। यह दर्शन यह नहीं कहता कि आप कभी दुखी न हों या नकारात्मक भावनाओं को महसूस न करें। बल्कि, यह सिखाता है कि इन भावनाओं को भी स्वीकार करें, उनसे लड़ें नहीं, उन्हें दबाएं नहीं। दुख को भी गहराई से महसूस करना जीवन का एक अंग है। प्रसन्नता का रास्ता यह नहीं है कि आप हमेशा एक नकली मुस्कान चिपकाए रहें, बल्कि यह है कि आप हर भावना के प्रति सचेत और स्वीकार्यता का भाव रखें। यह आपकी आंतरिक शांति को बनाए रखने में मदद करेगा, चाहे बाहरी हालात कुछ भी हों।

एक सामान्य दुविधा यह है कि क्या इसका मतलब यह है कि हम महत्वाकांक्षा छोड़ दें और संघर्ष ही खत्म कर दें? बिल्कुल नहीं। महत्वाकांक्षा होनी चाहिए, लेकिन वह आपके वर्तमान के सुख को निगल न जाए। आप एक सफल उद्यमी बनने का लक्ष्य रख सकते हैं, लेकिन साथ ही आज के काम में, टीम के साथ सहयोग में, नई चुनौतियों को सीखने और समाधान करने में आनंद ले सकते हैं। सफलता तब एक सहज और स्वाभाविक परिणाम बन जाती है, न कि सुख का एकमात्र स्रोत ।

निष्कर्षः प्रसन्नता वह फूल है जो रास्ते में ही खिलता है

जीवन एक लंबी सड़क की यात्रा के समान है। यदि आप यह सोचकर चलेंगे कि सिर्फ़ मंजिल पर पहुँचकर ही आनंद मिलेगा, तो आप पूरी यात्रा को उबाऊ, थकाऊ और निरर्थक बना देंगे। आप रास्ते के सुंदर नज़ारों, ताज़ी हवा, साथ चल रहे लोगों की संगति और हर कदम के अनुभव को छोड़ जाएंगे। लेकिन यदि आप यात्रा को ही

आनंद लेने का माध्यम बना लें-रास्ते के नज़ारों, साथी यात्रियों की बातचीत, चलने के तरीकेऔर हर पड़ाव के अनुभव का आनंद लें-तो मंजिल तक पहुँचते-पहुँचते आपने अनगिनत प्रसन्नता के पल एकत्रित कर लिए होंगे। मंजिल मिले या न मिले, आपकी यात्रा स्वयं में समृद्ध और सार्थक रही होगी। प्रसन्नता कोई ऐसा फूल नहीं है जो किसी दूर पहाड़ की चोटी पर मिलेगा। प्रसन्नता तो वह फूल है जो आपके चलने के रास्ते में हर कदम पर, हर मोड़ पर खिल रहा है। बस जरूरत है, आँखें खोलकर उसे देखने की, उसकी खुशबू को महसूस करने की, और उसे तोड़े बिना उसका आनंद उठाने की।

ए.आई.का भावनात्मक जुड़ाव

सुदेश कुमार
(सहायक पर्यवेक्षक)

अर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कृत्रिम बुद्धिमता (ए.आई.) एक ऐसी तकनीक है जो मशीनों को इंसानों की तरह सोचने, सीखने, समस्या सुलझाने और तर्क क्षमता और निर्णय लेने जैसी क्षमताएं प्रदान करती हैं। ए.आई. डेटा से सीखकर जटिल कार्यों को स्वचालित कर सकता है। ए.आई. के जनक जॉन मैकार्थी हैं जिन्होंने 1956 में अर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) शब्द गढ़ा था। भारत में इसके जनक के रूप में डॉ राज रेड्डी को जाना जाता है, वो भारतीय मूल के कंप्यूटर वैज्ञानिक हैं। ए.आई. के कई फायदे हैं जैसे कार्य स्वचालन, बेहतर निर्णय लेना, ग्राहक अनुभव में सुधार, स्वास्थ्य सेवा में क्रांति और नवाचार को बढ़ावा आदि। यह दोहराए जाने वाले कामों को स्वचालित करके और जटिल समस्याओं को हल करके जीवन को आसान और अधिक उत्पादक बनाता है। इसके नुकसान जैसे रचनात्मक और भावना का आभाव, जवाबदेही और उत्तरदायित्व का अभाव, मानव कौशल खतरे में और निजता का उल्लंघन आदि हैं।

ऐसा माना जा रहा है कि ए.आई. इंसानों की जगह लेने जा रहा है, लग तो यहीं रहा है और केवल कंपनियों और कारखानों में नहीं लोगों की निजी जिंदगी में भी। पहले इस बात की संभावना और आशंका जताते रहे कि इससे कितनी उत्पादकता बढ़ेगी या कितनी नौकरिया आएंगी अथवा जाएँगी। इस बीच चुपके से यह इंसानी रिश्तों में भी प्रवेश कर चुकी है। अब ऐसी ऐप्सऔर रोबोट्स अस्तित्व में आ गए हैं जो दोस्त, साथी, पार्टनर यहाँ तक कि प्रेमी या जीवन साथी की भूमिका भी निभा रहे हैं। आज इस का बाजार करीब 40 अरब डालर को पर कर चुका है और दस साल में यह 550 अरब डालर पहुँच सकता है।

लोग ए.आई. की ओर क्यों आकर्षित हो रहें हैं, इसकी सबसे बड़ी वजह है दिन प्रतिदिन बढ़ता अकेलापन। सामाजिक अलगाव, छोटे परिवार, शहरी जीवन और वयस्त दिनचर्या ने मानवीय जुड़ाव को सीमित कर दिया है। ऐसे में ए.आई.साथी जुड़ाव का अनुभव देते हैं, दूसरा कारण है सुविधा और नियंत्रण। ए.आई. साथी चोबिसों घंटे उपलब्ध रहते हैं, उनमें वैसी भावनात्मक जटिलताएं या उपेक्षाएं नहीं होती जो आम मनुष्यों में होती हैं। उपभोगता जब चाहे संवाद कर सकता है और जब चाहे इसे बंद कर सकता है। नियंत्रण का यहीं अधिकार कई लोगो को आकर्षित कर रहा है।

आजकल जो ए.आई. उपयोग में है वो हैं ओपन एआई, गूगल, मेटा, एन्थोपिक, रेप्लिका, करैक्टर डॉट एआई, गेट्बोक्स, हॉर्मोनी आदि हैं। आने वाले दस वर्षों में एक औसत इन्सान की 50 से 80 फीसदी भावनात्मक जरूरतें ए.आई. द्वारा पूरी की जा सकती हैं। ज्यादातर ए.आई.प्राइवेट कम्पनियों की तरह काम कर रही हैं इसलिए सार्वजनिक तौर पर उन्होंने अपने उपभोगकर्ता आधार और राजस्व की जानकारी उपलब्ध नहीं करवाई है, लेकिन कुछ समूहों ने बताया है कि रेप्लिका ए.आई.के 2 करोड़ मासिक उपभोगकर्ता हैं तथा संभावित राजस्व 20 करोड़ डालर है। नंबर दो पर करैक्टर डॉट एआई है जिसके भी 2 करोड़ मासिक उपभोगकर्ता हैं तथा राजस्व 10 करोड़ डालर हो सकता है।

अब तो यह भी भविष्यवाणी कर दी गई कि अगले कुछ वर्षों में सुपर इंटेलिजेंस ए.आई. के विकास के बाद तो कम्पनियों को शायद सी.ई.ओ. की जरुरत भी न पड़े।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

अंतराष्ट्रीय योग दिवस

कार्यालयस्थल पर योग- स्वास्थ्य, अनुशासन और ऊर्जा का सन्देश

स्वस्थ कर्मी, सशक्त कार्यालय-सामूहिक योगाभ्यास

स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रगान के दौरान देशभक्ति, गौरव और समर्पण की भावना सभी अधिकारियों और कर्मचारियों में दिखाई दी

स्वतंत्रता दिवस समारोह में पारितोषिक वितरण कर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया गया

तीज उत्सव

तीज उत्सव: पम्परा उमंग और सांस्कृतिक सौहार्द का सुन्दर संगम

हिंदी पखवाड़ा

प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हिंदी पखवाड़े का शुभारम्भ किया गया

हिंदी पखवाड़े के अवसर पर हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 44वें अंक का विमोचन किया गया

कविता

राजभाषा हिंदी: कर्तव्य और संकल्प

सुनील कुमार
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
राजभाषा अनुभाग

हिंदी का प्रचार बहुत, पर प्रसार अभी अपूर्ण है.
प्रयास अनेक हैं, किंतु लक्ष्य अब भी नहीं संपूर्ण है।
कार्यालयों में भी दिखता यही सा व्यवहार,
अंग्रेज़ी आगे बढ़ी, हिंदी उपेक्षित और लाचार।

हिंदी पखवाड़ा आते ही सजगता आ जाती है
उत्सव की भाँति हर ओर हिंदी गूंज जाती है।
बैनर, भाषण, प्रतियोगिताओं का दौर है,
कुछ दिनों को लगता है, हिंदी का ही जोर है।

जाते ही पखवाड़े के उत्साह थम जाता है,
फिर वही अंग्रेजी का वर्चस्व बन जाता है।
राजभाषा हिंदी को सर्वप्रथम करना,
एक सुंदर-सा सपना बन कर रह जाता है।

राजभाषा केवल नियमों की पहचान नहीं है,
यह संस्कृति, संवेदना और स्वाभिमान है।
जब फाइल, टिप्पणी पत्राचार में आएगी
तब कार्य की गुणवत्ता स्वतः बढ़ जाएगी।

आओ सोचें हिंदी में हिंदी में काम करें,
अपनी संस्कृति की पूजा राजभाषा का मान करें।
पखवाड़े तक सीमित न रहे यह भाषाई भाव,
नित्य व्यवहार में हिंदी को दें स्थायी ठहराव ।

जिस दिन हिंदी के प्रति लगाव हमें हो जाएगा.
राजभाषा मंत्रालय का भी कार्य सफल हो जाएगा।
न किसी में झिझक होगी हिंदी के प्रयोग को लेकर,
सब करेंगे महसूस गौरवान्वित हमारी हिंदी भाषा को लेकर।

"हिंदी भाषा को केवल संवाद का माध्यम कहना, स्वयं से और समाज की भावनाओं के साथ अन्याय करना जैसा होगा।"

धरती के रखवाले

मलखान सिंह आज़ाद
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

प्रकृति प्रेमियों को मैंने
आँगन का पेड़ कटवा कर,
फिर उसी ठूंठ के साए में
दो गमले रख मुस्कुराते देखा है।

"जल ही जीवन है का
जोर शोर से नारा दे कर,
फिर उसी शख़्स को घंटों
गाड़ी पर पानी बहाते देखा है।

"पेड़ बचाओ" की मुहिम में
लाखों पर्चे छपवा कर,
फिर उन्हीं काग़ज़ के टुकड़ों
को हवा में उड़ाते देखा है।

विकास की अंधी दौड़ में
हरी वादियों को उजाड़ कर,
फिर सुकून की तलाश में
पहाड़ों की ओर जाते देखा है।

गंगा को 'माँ' कहकर
श्रद्धा से शीश झुकाने वालों को,
फिर उसी पावन धारा में
शहर का मैल बहाते देखा है।

चेहरे पे मुखौटे ओढ़े इंसानों को
मौसम दर मौसम रंग बदलते देखा है,
एक हाथ में पर्यावरण का झंडा,
और दूजे से धरती जलाते देखा है।

एक दिन सब बदल जाएगा

धर्म सिंह मीना
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

एक दिन सब बदल जाएगा,
पगडण्डियाँ सड़कों में तबदील हो जाएगी
कच्चे घर कंक्रीट के मकानो में दफ़्न हो जाएंगे|

तकती रहेगी गाँव की चौपाल, जो अब शहर की सभाएँ सजाएँगी|
गाँव यूँ ही सुनसान बन जाएंगे|
ढूंढोगे सितारों को शहर के दूषित आसमान में,
जिन्हें देखा करते थे कभी गांव के मचान से |
एक दिन सब बदल जाएगा|
ये जीवन हमे यूँ ही सताएगा|

वो बैल गाड़ी अब मोटर कार के साँये में छुप जाएगी,
बचपन भी जवानी में बदल जाएगा, और जीवन के अंत में बुढ़ापा
तुम पर मुस्करायेगा |
एक दिन सब बदल जाएगा|
ये जीवन हमे यूँ ही सताएगा|

मरने को मजबूर इस भीड़ में जिंदा लाश बनकर रह जाएंगे,
मजबूरी में तो आगे बढ़ते जाओगे,
मगर पीछे अपना गाँव और बचपन सब भूल जाओगे|

ढूंढोगे अपने बचपन को इस शहर के गलियारों में,
मगर वापस ना लौट पाओगे अपने उन बचपन के
कोमल विचारों में|
एक दिन सब बदल जाएगा|
ये जीवन हमे यूँ ही सताएगा|

क्या इन जंजीरों से खुद को आज़ाद कर पाओगे,
ये सोचते सोचते ही एक दिन ये जीवन, शहर की इस
भाग दौड़ भरी जिंदगी में घुट घुट कर मर जाएगा |
एक दिन सब बदल जाएगा|
ये जीवन हमे यूँ ही सताएगा |
ये जीवन हमे यूँ ही सताएगा |

मोबाइल का असर और हमारा हश्र

राजीव सूद
(वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी)

कलयुगी मोबाइल ने सारे घर का बजट बिगाड़ा है,
इसके चक्कर में घर बन गया अजब अखाड़ा है।
इस मोबाइल ने क्या सितम ढ़ाया है,
अपनों को अपनों से ही लड़ाया है।
घर में जो छः जन अपने हैं ,
आज बने वो ही हसीन सपने हैं ।
रिश्तों की मानों ब्रेकिंग होने लगी,
जबसे इस पर चैटिंग नॉनस्टाप होने लगी।
जन्मदिन की बधाई कितनों ने चुपचाप इस पर सरकाई,
लेकिन किसी की सुरीली आवाज़ कानों में ना आई।
देख रीलों का अजब हंसी मज़ाक,
घर में रोज हो रही तू तड़ाक।
देखों नौजवानों की है अजब कहानी,
घर बैठ मोबाइल पर है सेहत बनानी।
आज मोबाइल पर हो रहा सारा व्यापार,
देख सोशल मीडिया बन रही देश और राज्यों की सरकार।
मोबाइल देख बीवी ने खूबसूरत साड़ी मंगवाई है,
डिलीवरी लेकर ना किसी को रत्ती भर भाई है।

रिटर्न को लेकर रीफन्ड का अपना ही माया जाल है,
इस झोल में फंसकर कितनों का बुरा हाल है।
मोबाइल पर जबसे दिया कुछ बेचने का विज्ञापन,
कन्फ्रूयज़ हुआ दिमाग और व्याकुल हो रहा मन।
पर्वतीय स्थल घूमने तो दोस्त का परिवार जाता है,
स्टेटस मोबाइल पर देख हंगामा मेरे घर हो जाता है।
अपना मोबाइल हाथ में हो तो सब मंगल ही मंगल है,
छू ले दूसरा तो हो जाता पल में दंगल है।
इश्क, मोहब्बत और झटपट शादी,
ना जाने कितनों की इसने करवा दी।
देखी मोबाइल पर रिश्तों की ऐसी दुरगती,
कोर्ट पहुंचे ना जाने कितने पत्नी और पति।
इस मोबाइल के चक्कर में जितने हम आबाद हुए,
लालच और ना समझी में उतने हम बर्बाद हुए।
जिस घर में हंसी एक कोने में सिमटी है,
समझों वहां सदस्यों से ज्यादा मोबाइलों की गिनती है।
मोबाइल छोड़ कभी तो आओ आपस में बतियाएं,
रिश्तों की बढ़ती दूरी थोड़ी तो कम कर पाएं।
मेरी आप सभी से है हाथ जोड़कर विनम्र प्रार्थना,
कुछ तो कम करो यारो मोबाइल की आराधना।
आओ जोड़े दोस्ती और रिश्तों के नए बंधन,
छोड़े मोबाईल पर करना व्यर्थ का चिंतन।
मोबाइल के ज़रूरी स्वरुप की आओ करें पहचान,
तभी होगा हमारी उभरती समस्याओं का स्वयं समाधान|
नहीं करता कभी यह बेवफाई, निभाता पूरी वफादारी,
प्रयोग में इसको लाए हम देकर अपनी समझदारी|

गर्भस्थ कन्या

तुषार कान्ति सिन्हा
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

काश हमें अपने अंग लगा लेते तुम।
काश मुझे अपना बना लेते तुम।
बन जाती मैं पापा की परी,
जो मुझे उड़ना सिखला देते तुम।

कलेक्टर बन जाती मै भी, अगर मुझे पढ़ाते तुम।
मै बन जाती माँ, बहन और बहु, दुनिया में जो ले आते तुम।

भैया की कलाई मे भी होती राखी, भैया से जो मिलवा देते तुम।
नाना तुम्हें बना देती मैं, मुझे मेरी माँ की गोद दिला देते तुम।

हार जमाने से न जाते तुम।
जो मुझको अपनी गोद बिठा लेते तुम।
जमाने को हरा देते हम और तुम।
काश मुझे अपनाते तुम।
माँ की कोख में मुझे नही दफनाते तुम।

लड़की एक अनजानी सी

काश लबों से ज्यादा उसके आँखों पर ध्यान देते।
अश्क था या नीर जान लेते।
शुष्क लब थे नयन क्यों लबरेज थे उसके।
महफूज थी या मजबूर,कुछ तो मान लेते।

असर तपिस का था या रुख़सार लाल थे उसके।
शबनम थी या शोला, हाय उसे पहचान लेते।
गले लगा लेता अगर होती कोई निशानी।
बदनसीबी की लिवास मे खड़ी थी मासूम सी
जवानी।

तपती धूप मे पेट की आग थी उसे मिटाना।
दर दर मांग रही थी आब-ओ-दाना।

मां से बात

दिनेश
(सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)

आज बहुत दिनों के बाद मां से मिला और मां से दो बात हुई
उस दिन वक्त का पता ही नहीं चला कब दिन गुजरा कब रात हुई
जैसे ही मां ने मुझे देखा उसके चेहरे पर एक अलग सी खुशी छा गई
और वो मां की हँसी मेरे सारे दुख, ग़म खा गई

मानो ऐसा लगा की मेरी मां की उन बूढ़ी आंखों को मेरा ही इंतजार था
शब्दों में बयां ना हो सके इतना उसकी आंखों में प्यार था
मां ने कहा कैसा हो गया है तू अपना जरा भी नहीं करता ख्याल,
कुछ दुख है तो बता कह दे अपने मन का हाल

मैने कहा नहीं मां ऐसा तो नहीं है बस तेरे खाने जैसा स्वाद कहीं और नहीं है
बातों-बातों में मैने कहा मां मेरी फिक्र छोड़ कर कुछ खुद की भी फिक्र किया कर,
अपने दुख, दर्द, तबियत का कुछ तो जिक्र किया कर,
कहती कि मैं तो ठीक हु मुझे क्या होना है
अब तो बुढ़ापा आ गया है बस अब क्या ही खोना है

मेरी मां अपने जोड़ो के दर्द, दुख, तकलीफ सब मुझसे छुपा रही थी,
मां की वो ममता भरी आँखें मुझे सब कुछ बता रही थी
फिर वक्त आ गया मैने कहा अच्छा अब चलता हूँ
फिर आऊंगा तेरी ममता का वो मीठा खाना फिर खाऊंगा,
मुझसे बोली कि जल्दी-जल्दी आया कर और ऐसे बातें अधूरी छोड़ कर न जाया कर
तुझे देख कर दिल को आराम आता है और इस बुढ़ापे में और जीने को जी चाहता है
बस अब उस पल का इंतज़ार है कि कब फिर से वो दिन होगा
जब मां के साथ बातों का सिलसिला शुरू होगा
जो अधूरी रह गई है मां की बाते उनको पूरा करना है
और मां का वो हंसता चेहरा फिर से आंखों में भरना है

मां...तू हैं तो मैं हुँ, तू ममता, तू करुणा, तू सागर, तू ही रब है,
तुझे कैसे बताऊ मां मेरा तो तू ही सब है
मां... तू उजाला, तू दुलार, तू पूजा, तू मेरा संसार
तेरे सिवा कौन हो सकता है मेरा पहला प्यार

हाँ, मैं अब कुछ बदल सा गया हूँ

गुरदीप कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

चला जा रहा था कईयों दूर तलक
आँखें बंद करके
एक ठोकर ने जैसे गिरा सा दिया
जब आँखें खुली स्वप्न से तो लगा
जैसे सहम सा गया हूँ
हाँ, मैं अब कुछ बदल सा गया हूँ...

मीलों घूमा समंदर में
धरती पर लाखों लोग मिले
पर जब से जानी है हकीक़त कुछ अपनों की
सच में कुछ ठहर सा गया हूँ
हाँ, मैं अब कुछ बदल सा गया हूँ...

अच्छा है गर इंसान अंजान रहे कुछ बातों से
कशाकश कर रही इस दुनिया में
दो चेहरे रखने वाले अपनों की
आज भी दिल में दफन कर हकीक़त
कुछ संभल सा गया हूँ
हाँ, मैं अब कुछ बदल सा गया हूँ...

दिख रही बड़ी दूर है वो धुंधली सी (मंजिल)
मन में अचल, अडिग निश्चय ले
अंजान राहों में अकेले ही
धीमे-धीमे कदमों से "गुरु" निकल सा गया हूँ
हाँ, मैं अब कुछ बदल सा गया हूँ...

मरघट

महेंद्र पाल माही
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

अच्छे- बुरों को समा लेता है मरघट
गैरों को भी अपना बना देता है मरघट
जलते हुए उस मुर्दे की आवाजें
इस मुर्दे को सुना देता है मरघट

जब जब वहां उठता है धुआं
इस दिल में आग लगा देता है मरघट
भागते रहे पूरी जिंदगी जान करके
उस मौत से सामना करा देता है मरघट

वहां केवल चिता को ही आग नहीं लगती
झूठे अरमान जला देता है मरघट
टिकता हो चाहे वो कुछ पल के लिए ही
पर सच जगा देता है मरघट

वैर चाहे कितना भी हो एक दूसरे से
सारे गिले शिकवें मिटा देता है मरघट
निकलते ही बाहर फिर खो जाते हैं
सच-झूठ की सीमा बना देता है मरघट

कर्मों की छवि फिर दोहराई जाती है
'माही' को अमर बना देता है मरघट
अच्छे- बुरों को समा लेता है मरघट
गैरों को भी अपना बना देता है मरघट
जलते हुए उस मुर्दे की आवाज़ें
इस मुर्दे को सुना देता है मरघट

खुद को भूला बैठा

महेंद्र पाल माही
(वरिष्ठ लेखापरीक्षक)

म्यान में रखकर भूल गए हो अपनी जिस तलवार को
बाहर निकाल जरा चमकाओ जंग लगी हुई धार को
वक्त की बेड़ियों पे रखके सिर बेफिक्र हो सो गया था
लगन, उमंग अब भी वैसी जोश ही कही खो गया था

जीवन राह के अश्वों पर चढ़ ज़रा हुंकार तो भर
मंजिल बन जाएगी प्रेयसी तू अपना इज़हार तो कर
अचेत हो जाए बुरा वक्त भी झेल तेरे प्रहार को
म्यान में रखकर भूल गए हो अपनी जिस तलवार को

अदृश्य किस्मत खड़ी सामने लटकी हुई है ओझल डोर
कसके पकड़ जरा जोर से आया छोर जो तेरी ओर
दिल है तेरा पर्वत जैसा रखते हो फौलादी बाहें
साहिल है एक बंद झरोखा खोलनी होगी तुझको राहें
तकलीफें बढ़ जाती हैं अक्सर देख किसी लाचार को
म्यान में रखकर भूल गए हो अपनी जिस तलवार को

होते हैं बलशाली जो पानी में आग लगाते हैं
बंद पड़े हो विकट रास्ते उनमें राह बनाते हैं

डरते नहीं वो चंद झोंकों से तूफ़ान का सामना करते हैं
खेलते हैं वो गम से हरदिन अश्कों को कैद रखते हैं

चले हो 'माही' जिस राह पे कसके पकड़ो ज़रा पतवार को
म्यान में रखकर भूल गए हो अपनी जिस तलवार को
बाहर निकाल जरा चमकाओ जंग लगी हुई धार को

प्रगति

महेंद्र सिंह
(वरिष्ठ अनुवादक)

प्रगति प्रगति प्रगति प्रगति, प्रगति बिन ये जहान नहीं।
सब कहते हैं बिना प्रगति, मानव की कोई पहचान नहीं।।

पैसा पैसा पैसा हाय पैसा, मन में यही लगन लगी है।
कोठी बंगले गाड़ी जहाज, तन में यही अगन लगी है।
मेहनत पर विश्वास नहीं, जादूई सपनों की खटक लगी है।
प्राणी का कुछ मोल नहीं, बस अर्थ की ललक लगी है।
आपसी प्यार जीवन का आधार, इतना भी रहा ख्याल नहीं।
प्रगति प्रगति प्रगति प्रगति, प्रगति बिन ये जहान नहीं।
सब कहते हैं बिना प्रगति मानव की कोई पहचान नहीं।।

जिस प्रकृति ने पाला- पोसा, उसी को तोड़-मरोड़ दिया है।
जिस पेड़ के फल खाए हैं, उसका ही तना तोड़ दिया है।
जिन पहाड़ो ने जीवन सिखाया, उस पर भी बम फोड़ दिया है।
जिसकी गोद में मिले शांति, उसी का आँचल छोड़ दिया है।
प्रकृति बिन जीवन नहीं, फिर भी उस पर कोई मान नहीं।
प्रगति प्रगति प्रगति प्रगति, प्रगति बिन ये जहान नहीं ।
सब कहते हैं बिना प्रगति मानव की कोई पहचान नहीं।।

पेड़ पौधे जहां मुस्काते थे, वहां कचरे के अंबार लगे हैं।
चहल पहल जहां होती थी, वहां कब्रिस्तान-शमसान बने हैं।
जाति, धर्म, क्षेत्रवाद, सब ऊंच नीच के फेर में लगे हैं।
भाईचारे की देकर बली, एक दूसरे को घेरने में लगे हैं।
सब प्राणियों का अधिकार यहां, इतना भी रहा ध्यान नहीं।
प्रगति प्रगति प्रगति प्रगति, प्रगति बिन ये जहान नहीं।
सब कहते हैं बिना प्रगति मानव की कोई पहचान नहीं।।

नारी है जीवन का सार , फिर भी परीक्षा देती बार-बार ।
एक तरफ कहलाए पैर की जूती, दूसरी तरफ पूजे संसार।
पहले बना दी श्रृंगार की वस्तु , अब है विज्ञापनों का आधार
अबला नहीं सबला है नारी, इसमें भी है नारी की ही मार ।
भोग-विलास की वस्तु नहीं नारी, इतना भी हुआ ज्ञान नहीं।
प्रगति प्रगति प्रगति प्रगति, प्रगति बिन ये जहान नहीं।
सब कहते हैं बिना प्रगति मानव की कोई पहचान नहीं।।

मानव तनकर खड़ा हुआ है, अभिमान के अंगारों पर।
बन कठपुतली फिरे नाचता, बनावटी झूठे इशारों पर।
बलशाली का मिथ्या दम्भ भरकर, राज करे मिनारों पर।
मानवता को झोंक नरक में, नाज करे हत्यारों पर।
बारूद के ढेर पर बैठा हुआ है, तनिक इतना भी भान नहीं।
प्रगति प्रगति प्रगति प्रगति, प्रगति बिन ये जहान नहीं।
सब कहते हैं बिना प्रगति मानव की कोई पहचान नहीं।।

बदलाव

सुश्री मानसी दुबे
सुपुत्री श्री प्रमोद कुमार दुबे
(वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

हम तमाशा करेंगे, तमाशाई तमाशा देखेंगे
फिर सब लौट जाएंगे घर अपने
और रह जाएंगे रास्ते में अकेले
दो मासूम हाथ ..

जो हल्ला सुन आ गए थे
ये सोच कि मिलेगी आज
बहुत दिन बाद शायद रोटी,
वो दो नन्हे पैर ..
जो दौड़ आए थे
ये सोचते कि सरकार की गाड़ी
आज लाई होगी इन
छालों से भरे पैरों के लिए चप्पल,
और रह जाएंगी दो निराश आँखें
जो खुली थी ये सोच,
कि आज दिखेगी उम्मीद की कोई किरण
और हो जाएगी बंद फिर से
और सो जाएगा वो
नन्हा मैला कुचला शरीर
फिर से किसी फुटपाथ पर,
पुराने निकले सरकार के बैनर को
अपना कम्बल बनाए
जिस पर लिखा है
बदलाव आएगा ।

अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति

(01-04-2025 से 30-09-2025)

समय अपनी गति से चलता रहता है। कार्यालय में जिन्हें हम अपना प्रेरणा स्रोत मानते हैं, जिनके सक्षम कार्यकलापों से हम बहुत कुछ सीखते हैं, जिन्हें प्रतिदिन देखते हैं, अचानक पता चलता है कि वे सेवानिवृत्त हो रहे हैं। उनका दीर्घ अनुभव व मार्ग दर्शन अब हमें प्राप्त नहीं होगा। तब उनके सुखी व स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए स्नेह व सम्मान के पुष्प अर्पित करके ही संतोष करना पड़ता है। "सुगंधा" परिवार इन महानुभावों की कार्यालय के प्रति की गई सेवा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता है एवं उनके सुखी व समृद्ध जीवन की कामना करता है।

क्र. सं.	सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि	टिप्पणी
1	संजय सप्रू, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2025	-
2	रमेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2025	-
3	सुरेश कुमार भीम, सहायक पर्यवेक्षक	30.04.2025	-
4	प्रेम चंद शर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30.04.2025	-
5	दीप राज, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30.04.2025	-
6	रेखा रानी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.04.2025	-
7	राजकुमार चौहान-3, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2025	-
8	अश्वनी कुमार शर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.05.2025	-
9	प्रेम चंद-I, सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2025	-
10	राजेश कुमार मलिक, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.06.2025	-
11	नवीन कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.07.2025	-
12	सुखपाल सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.08.2025	-
13	मदन लल्ली, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2025	-
14	सूरज प्रकाश, एम. टी. एस.	30.09.2025	-

श्रद्धांजलि

जन्म एवं मृत्यु सब विधि का विधान है। हमें बहुत दुख होता है जब विधि द्वारा बनाए विधान के अनुसार हमारे बीच से कोई अपना प्रिय काल का ग्रास बन जाता है।

हमारे कार्यालय के निम्नांकित साथी के असामयिक निधन की पीड़ा हमें गत वर्ष सहनी पड़ी। 'सुगंधा' परिवार दिवंगत साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परम पिता परमेश्वर से यह प्रार्थना करता है कि प्रभु उनकी आत्मा को चिर-शांति प्रदान करें तथा उनके परिवारजनों को विपदा की इस घड़ी में शक्ति प्रदान करें।

क्र. सं.	नाम श्री/श्रीमती	पदनाम	देहावसान तिथि
1.	बिरास बाबु	एम. टी. एस.	25.07.2025

ध्वजारोहण

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–1)

पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017